सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-27 अंक-16 22 अगस्त से 5 सितम्बर, 2012 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष स्मृति दिवस देश भर में सम्मानपूर्वक मनाया गया

इस युग के महान मार्क्सवादी दार्शनिक सर्वहारा के महान नेता, एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के संस्थापक महासचिव कॉमरेड शिवदास घोष का 36वाँ स्मृति दिवस देश भर में सम्मानपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर स्मृति सभाएं आयोजित की गईं। सभी जगह सभा की शुरूआत में कॉमरेड शिवदास घोष के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। सभा की शुरूआत कॉमरेड शिवदास घोष पर रचित गीत से हुई और समापन अन्तर्राष्ट्रीय गीत के साथ हुआ। स्मृति सभाओं के अब तक प्राप्त समाचार यहाँ दिए जा रहे हैं।

रोहतक (हरियाणा): 8 अगस्त को हरियाणा में रोहतक के छोटूराम पार्क हाल में कॉमरेड शिवदास घोष स्मरण सभा हुई जिसकी अध्यक्षता एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के केन्द्रीय कमेटी सदस्य और हरियाणा राज्य कमेटी के सचिव कॉ. सत्यवान ने की। सभा के मुख्य वक्ता थे पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉ. रणजीत धर। सभा का मंच संचालन राज्य कमेटी सदस्य कॉ. रामफल ने किया। सभा को पार्टी के राज्य कमेटी सदस्य कॉ. अनूप सिंह ने भी सम्बोधित किया।

सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. रणजीत धर ने कहा कि हर साल 5 अगस्त को शिवदास घोष की स्मृति में यह दिवस मनाया जाता है। शिवदास घोष जन्मजात महान नहीं थे। इसलिए हम उनका मृत्यु दिवस मनाते हैं जन्म दिवस नहीं। हर साल हम समीक्षा करते हैं कि उनकी दिखाई राह पर हम अपने जीवन-संघर्ष में कितने आगे बढ़े, संगठन कितना आगे बढ़ा और कितनी दूर हमें जाना है। इस राह पर चलने की शपथ लेने का यह दिन है।

कॉमरेड धर ने कहा कि इन्सान बनने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। सच्चाई को जानना और सच्चाई के रास्ते पर चलना ही इन्सान बनने का रास्ता है। सच्चाई को जान-समझ कर सच्चाई के रास्ते पर चलना ही शिवदास घोष का जीवन संघर्ष है। सही मायने में इन्सान बनने के इस संघर्ष का रास्ता हमें शिवदास घोष ने दिखाया। क्योंकि मार्क्सवाद को अपनाये बिना आप सत्य को नहीं जान सकते। सत्य को जानने के लिए उन्होंने मार्क्सवाद को अपनाया। इसलिए अगर हम सच्चाई जानना चाहते हैं, सच्चाई के रास्ते पर चलना चाहते हैं तो हमें मार्क्सवाद को अपनाना होगा। दुनिया में और हमारे देश में भी बहुत सारे दर्शन हैं लेकिन सच्चाई को जानने के लिए मार्क्सवाद ही एकमात्र दर्शन है जो विज्ञान पर आधारित है जो किसी व्यक्ति की कपोल कल्पना पर नहीं बल्कि परीक्षण-निरीक्षण पर, प्रमाणित सत्य पर आधारित है। मार्क्स ने जो कुछ कहा वह मार्क्सवाद नहीं है। लेनिन ने जो कुछ कहा वह लेनिनवाद नहीं है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद विज्ञान पर आधारित एक विचारधारा है। यह विज्ञान के आधार पर सोचने का तरीका है जिससे हम सत्य को जान सकते हैं।

सभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड रणजीत धर (इन्सेट)

शिवदास घोष के जीवन-संघर्ष पर रोशनी डालते हुए कॉ. धर ने बताया कि शिवदास घोष एक गरीब घर के लड़के थे, अपने माँ-बाप के वे सबसे बड़े लड़के थे। पिता की मृत्यु के बाद उनके कंधों पर परिवार की देखभाल की जिम्मेदारी थी। देश का मुक्ति-संघर्ष चल रहा था। पूरा देश इसमें शामिल हो गया था। खुदीराम बोस, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, सुभाष चन्द्र बोस आदि सब देश की आजादी के लिए लड़ रहे थे क्योंकि आजादी के बिना देश की मुक्ति नहीं होगी, देश का उद्धार नहीं होगा, देश की तरक्की नहीं होगी। विदेशी हुकूमत देश को लूट रही थी। इसलिए देश गरीब है और अगर गरीबी दूर करनी है, देश को तरक्की के रास्ते पर आगे ले जाना है, तो विदेशी हुकूमत को हटाओ। शिवदास घोष जब स्कूल में पढ़ते थे। वे 13 साल की उम्र में देश के आजादी आन्दोलन में कूद पड़े थे। वे अनुशीलन समिति में थे। 1941 में उन्हें कलकत्ता में गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया गया था। जेल में कुछ साल रहे। जेल में थे तब देश की आजादी आने का समय हो गया था। कांग्रेस अंग्रेजों से बातचीत करके समझौता करने जा रही थी। शिवदास घोष ने देखा कि इस तरह समझौते से जो आजादी आ रही है उससे देश की शोषित-पीड़ित जनता को शोषण से मुक्ति नहीं मिलने वाली है। हमारे देश का समाज एक अखण्ड नहीं बल्कि वर्ग-विभाजित है। यह दो वर्गों में बंटा हुआ है। एक तरफ मुट्ठी भर पूँजीपति हैं और दूसरी तरफ करोड़ों करोड़ मेहनतकश जनता है, मजदूर वर्ग है। अंग्रेजों के

(शेष पृष्ठ 2 पर)

फीस वृद्धि, दाखिला संकट, जनवादी अधिकारों पर हमलों व शिक्षा-विरोधी बिलों के खिलाफ एआईडीएसओ का दिल्ली विश्वविद्यालय में विरोध प्रदर्शन

दिल्ली : 17 अगस्त 2012 को एआईडीएसओ के तत्वावधान में दिल्ली युनिवर्सिटी में एक विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया गया। यह प्रदर्शन फीस वृद्धि, दाखिला संकट, जनवादी अधिकारों पर हमलों और संसद में लम्बित तमाम शिक्षा विरोधी बिलों के खिलाफ किया गया। छात्र आन्दोलन में पुलिस दखल के खिलाफ जोरदार नारों के साथ छात्रों ने जुलूस के रूप में दिल्ली युनिवर्सिटी के नार्थ कैम्पस के विभिन्न कॉलेजों में मार्च किया। छात्रों ने दिल्ली युनिवर्सिटी कैम्पस को पुलिस छावनी बनाने एवं शिक्षा विरोधी नीतियों को जबरन लागू करने के खिलाफ नारेबाजी की। सभा की अध्यक्षता दिल्ली राज्य कमेटी अध्यक्ष कॉ. भास्करानन्द ने की। सभा को दिल्ली राज्य कमेटी के सचिव कॉ. प्रशांत कुमार के साथ-साथ विभिन्न कॉलेजों से आए हुए छात्र नेताओं ने भी सम्बोधित किया। सभा दिल्ली विश्वविद्यालय को सौंपा जाने वाला एक ज्ञापन पत्र पढ़कर सुनाया गया। अन्त में ऑल इण्डिया डी.एस.ओ. की ओर से दिल्ली

राज्य कमेटी के कार्यालय सचिव कॉ. राहुल सरकार के नेतृत्व में एक ज्ञापन विश्वविद्यालय कुलपति को सौंपा गया। प्रतिनिधि मण्डल में ज़ाकिर हुसैन कॉलेज से कॉमरेड मो. आसिफ, खालसा कॉलेज से कॉ. मौसम कुमारी, सत्यवती कॉलेज (प्रात:) से कॉ. प्रवीन नाहरा एवं आट्स फैकल्टी से कॉ. मनोज यादव शामिल थे।

स्मृति सभाएं...

(पृष्ठ 1 का शेष)

खिलाफ आजादी आन्दोलन में दोनों ही वर्ग शामिल थे। आजादी की लड़ाई के मैदान में कोई पूँजीपति, टाटा-बिरला नहीं उतरा, उन्होंने कोई कुर्बानी नहीं दी, उन्होंने पैसा देकर कांग्रेस की मदद की। मैदान में उतर कर कुर्बानी दी आम जनता ने, मध्यम वर्ग ने, मजदूर वर्ग ने, गरीब किसान ने। शिवदास घोष ने देखा कि आजादी आ रही है लेकिन इससे देश की मेहनतकश जनता, किसान-मजदूरों को मुक्ति नहीं मिलेगी। भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, सुभाष बोस ने जो सपना देखा था वह पूरा नहीं होगा। केवल पूँजीपतियों के लिए आजादी आ रही है। उन्होंने सोचविचार कर इसका कारण खोजा क्योंकि मार्क्सवाद कहता है कि हर घटना के पीछे कोई कारण होता है, बिना कारण कुछ नहीं होता है, इसके पीछे कोई न कोई नियम काम करता है और उस नियम को आप जान सकते हैं। जैसे बीमारी का कोई न कोई कारण होता है उसको जानकर दवाई न दी जाए तो वह बीमारी नहीं जाएगी। क्यों हो रहा है यह जानने के लिए ही तो मार्क्सवाद की जरूरत है। आजादी की लड़ाई का फल पूँजीपतियों के हाथों में जाता देख कर शिवदास घोष ने इसका कारण ढूँढ़ा तो पाया कि इसकी जड़ आजादी आन्दोलन में ही है। एक वर्ग-विभाजित समाज में पार्टी किसी वर्ग की पार्टी होती है। वह सभी वर्गों की, पूरे देश की एक पार्टी नहीं हो सकती। वह पार्टी या तो पूँजीपतियों का स्वार्थ देखेगी या आम जनता का, वह दोनों का स्वार्थ पूरा नहीं कर सकती क्योंकि इनके स्वार्थ एक-दूसरे से न केवल अलग हैं बल्कि एकदम विपरीत हैं। पूँजीपति वर्ग खुद को अमीर बनाता है, गरीब को गरीब बनाता है, किसान-मजदूर को लूटता है इसलिए अमीर और गरीब के स्वार्थ परस्पर विरोधी हैं, अलग-अलग हैं। इसलिए पूँजीपतियों का स्वार्थ देखने के लिए अलग पार्टी होगी और मेहनतकशों का स्वार्थ देखने के लिए अलग पार्टी होगी। पूँजीपति अपने स्वार्थ की रक्षा करने के लिए अपने वर्ग की पार्टी बनाते हैं और गरीब मेहनतकश जनता जो शोषित-पीड़ित और वंचित है उन्हें अपने स्वार्थ की रक्षा करनी है तो अलग पार्टी चाहिए। उन्हें पहचाननी होगी कौन सी पार्टी उनके वर्ग की है। लोगों को धोखा देने के लिए पूँजीपति वर्ग की पार्टी यही कहती है कि वह आम आदमी की पार्टी है। जबकि आम आदमी का स्वार्थ भी देखे और पूँजीपति वर्ग का भी—ऐसा नहीं हो सकता। कांग्रेस आम जनता की नहीं बल्कि पूँजीपति वर्ग की पार्टी थी और है। सुभाष बोस के हाथों में कांग्रेस का नेतृत्व आया तो देश का पूँजीपति वर्ग उनके खिलाफ हो गया और उन्हें कांग्रेस से बाहर निकलने को मजबूर कर दिया। कांग्रेस का नेतृत्व गाँधीजी के ही हाथों में रह गया और कांग्रेस के गाँधीवादी नेतृत्व में ही आजादी आई। पूँजीपति वर्ग की पार्टी कांग्रेस की मदद से आजादी के बाद हमारे देश का पूँजीपति वर्ग सत्ता पर काबिज हुआ। इसलिए मजदूर वर्ग को मजदूर वर्ग की पार्टी के बिना मुक्ति नहीं मिलेगी। अगर गरीबों को मुक्ति हासिल करनी है तो गरीबों की पार्टी को मजबूत करना होगा, उसको ताकतवर बनाना होगा।

पार्टी के महत्व को समझाते हुए कॉ. धर ने आगे कहा कि राजनैतिक दल या पार्टी क्या है? वर्ग-विभाजित समाज में पार्टी जिस वर्ग की है उसके हाथों में उस वर्ग का लक्ष्य पूरा करने का औजार होती है। आजादी आन्दोलन में चूँकि कांग्रेस पूँजीपति वर्ग की पार्टी थी इसलिए आम लोगों को धोखा देकर इसकी मदद से आजादी का सारा फल पूँजीपति वर्ग ने हथिया लिया। पूँजीपति वर्ग के पास उनकी पार्टी कांग्रेस नहीं होती तो उनका स्वार्थ कौन देखता? इसलिए आपको भी आपके वर्ग की पार्टी के बिना मुक्ति नहीं मिलेगी। आजादी के बाद हमारे देश में पूँजीवाद कायम हुआ यानी पूँजीपतियों का शासन कायम हुआ। यह किसके बल पर चल रहा है? उनकी पार्टी के बल पर। चाहे वह पार्टी कांग्रेस हो या भाजपा या इनेलो, सपा, बसपा, जनता दल वगैरह हो, सब पूँजीपति वर्ग की पार्टियाँ हैं। पूँजीपति वर्ग बहुत चालाक है। वह जानता है कि अगर एक ही पार्टी से शासन चलाया तो उसका विरोध होगा, समस्याएं बढ़ जाएंगी इसलिए कई पाटियाँ बना लेते हैं जो उसके खिलाफ जनता में जाकर बड़े लम्बे-लम्बे भाषण देंगी और वायदे पेश करके जन-विक्षोभ को अपने पक्ष में कर लेंगी। इन सबको पैसा कौन देता है? इनका फण्ड कहाँ से आता है? विधानसभा व लोकसभा सीट के लिए एक-एक उम्मीदवार जो करोड़ों रुपये खर्च कर डालता है वह कहाँ से आता है? पूँजीपति वर्ग यह पैसा उन्हें देता है। इसके बल पर वे पुलिस-प्रशासन, मीडिया और वोटरों को खरीद लेते हैं। लेकिन गरीबों की, मजदूर वर्ग की केवल एक ही पार्टी हो सकती है। शिवदास घोष ने इस देश की सरजमीन पर गरीबों की ऐसी ही पार्टी एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) 1948 में बनायी। देश में उस समय कम्युनिस्ट नामधारी पार्टी सीपीआई थी। उसे सोवियत संघ के स्टालिन और चीन के माओ-त्से तुंग का समर्थन प्राप्त था। दुनिया भर में साम्यवाद के पक्ष में जो लहर चल रही थी उसका सारा फायदा उसे मिल रहा था। हमारे देश में भी समाज कल्याण की सोचने वाले लोग, शिक्षित लोग, बुद्धिजीवी, साहित्यकार, संगीतकार, कलाकार, सभी बड़े-बड़े लोग कम्युनिज्म के नाम पर सीपीआई में चले गये थे। जबकि शिवदास घोष को कोई नहीं जानता था, न उनका कोई नाम था न पहचान। यहाँ तक कि उनका जन्म भी यहाँ नहीं बांग्लादेश में ढाका के पास एक गाँव में हुआ था। वहीं पढ़े थे। सभी परिचित लोग, बचपन के दोस्त वहीं रह गये थे। न उनका रहने का कोई ठिकाना था और न दो वक्त के खाने की कोई व्यवस्था। न उनके साथ कोई बड़ी हस्ती थी। जब शिवदास घोष ने कहा कि सीपीआई सही कम्युनिस्ट पार्टी नहीं है इसलिए हमें सही कम्युनिस्ट पार्टी बनानी है तो लोगों ने कहा यह पागल है। यह असम्भव सी बात है। लेकिन शिवदास घोष कहते थे कि क्रान्तिकारियों की डिक्शनरी में असम्भव शब्द नहीं होता।

मुक्ति का रास्ता क्या है इस बारे में कॉ. धर ने कहा कि शिवदास घोष को जानिए, उनके चिन्तन को समझिये। शिवदास घोष के बिना क्रान्ति नहीं होगी। मैं सिर्फ हिन्दुस्तान की ही क्रान्ति की नहीं बल्कि विश्व क्रान्ति की बात कर रहा हूँ। मार्क्स का कहना है कि मजदूर घर में पैदा होने से कोई कम्युनिस्ट नहीं बन जाता। मजदूर तो पूँजीवादी समाज में पैदा होता है। उसे कम्युनिस्ट बनने के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। मजदूर होने से ही वे क्रान्ति नहीं कर सकेंगे। जो मजदूर क्रान्ति करना चाहते हैं पहले उन्हें खुद को बदलना होगा। क्रान्तिकारी चरित्र अपनाना होगा। वरना आपमें सम्पत्ति के प्रति मन में जो लोभ है, मोह है, व्यक्तिगत स्वार्थ है वह रहने से क्रान्ति कर लेने पर भी, जनसमर्थन पाकर सत्ता पर बैठ जाने पर भी आप इसका इस्तेमाल व्यक्तिगत स्वार्थ में करेंगे। तब मुक्ति कहाँ मिलेगी? अगर कम्युनिज्म के बहाने सत्ता दखल भी कर ली तो बचा नहीं पायेंगे जैसे सोवियत संघ और चीन में समाजवाद चला गया। स्टालिन की पार्टी, माओ-त्से तुंग की पार्टी उसकी रक्षा नहीं कर सकी। सुधारवाद-संशोधनवाद आ गया। यह सुधारवाद-संशोधनवाद है साम्यवादी आन्दोलन में बुर्जुआ चिन्तनधारा की घुसपैठ, कम्युनिस्ट चिंतन प्रक्रिया के अन्दर बुर्जुआ चिन्तन प्रक्रिया का आ जाना। बुर्जुआ सोच, आदत, आचरण-व्यवहार, रीति-रिवाज, दस्तूर आ जाना। इसका मायने है व्यक्तिवाद आ जाना। व्यक्ति को केन्द्रित करके जो कुछ आचार-आचरण, चिन्तन प्रक्रिया ही व्यक्तिवाद है। व्यक्तिवाद छोड़ना होगा और सामूहिकता अपनानी होगी।

कॉ. धर ने कहा कि हम समाजवाद-साम्यवाद लायेंगे, पूँजीवादी राजसत्ता को उखाड़ कर समाजवादी राजसत्ता कायम की जाएगी जिसमें किसी एक-दो या पाँच-दस व्यक्ति का नहीं बल्कि हर व्यक्ति का विकास होगा। सामाजिक-सामूहिक धन-सम्पदा का कोई एक मालिक नहीं रहेगा बल्कि सामूहिक मालिकाना होगा। जिस जमीन पर हम रहते हैं वह जमीन, जल, खान-खदानों से निकलने वाले खनिज, बाग-बगीचे और जंगल जो कुछ संसाधन हैं सब प्रकृति की देन हैं। आदमी ने प्रकृति से इन्हें लेकर अपनी मेहनत लगा कर कपड़ा, खाना और जरूरत के अन्य सामान तैयार किये है जिनका वह उपयोग करता है। प्रकृति की चीजें सब की हैं, पूरे मानव समाज की हैं, जल-जमीन-हवा और बाग-बगीचे-फल किसी एक व्यक्ति की नहीं हैं। आदमी अपने स्वार्थ के कारण बाकी लोगों को इनसे वंचित कर इन पर कब्जा कर लेता है बस। यह ज्यादती है। लूट है। शोषण है। पूँजीवाद में जो उद्योग-धंधे लगते हैं वे निजी मालिकाने में हैं। उनमें आदमी जो कुछ तैयार करते हैं वह समाज के उपभोग के लिए करते हैं लेकिन वे उनका उपभोग नहीं कर पाते हैं। उत्पादन उपभोग के लिए नहीं बल्कि बाजार में बेचने के लिए होता है। आज उत्पादन बाजार में लाकर बेचने के लिए, ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए होता है। सब कुछ मालिकों की मुट्ठी में है। आपके पास पैसा है, खरीदने की शक्ति है तो आप खरीद सकते हैं वरना नहीं। आपको नहीं मिलेगा चाहे आप भूखों मरें, नंगे रहें। आदमी अच्छा गेंहू उगाने पर भी खुद नहीं खा पाता है। उसे बाजार से खराब गेंहूँ खरीद कर खाना पड़ता है। उत्पादन सामूहिक तौर पर हो रहा है और समाज के लिए हो रहा है लेकिन उसका मालिकाना व्यक्तिगत है इसलिए वह उसका फल ले लेता है। सभी आदमियों की मेहनत से जो कुछ तैयार होता है उसे कुछ व्यक्ति मालिक व्यक्ति-अधिकार और सत्ता के बल पर हथिया लेते हैं। व्यक्ति मालिकाना के चलते कुछ लोग लूट लेते हैं। यही सारी समस्या की जड़ है। आज समाज में यह जो अन्याय चल रहा है इसके खिलाफ हमें लड़ना है। इस अन्याय को खत्म करना है। इससे समाज को मुक्त नहीं किया गया तो समाज की प्रगति नहीं होगी। यहीं रोक दी गई है। उत्पादन की लोगों को जरूरत भी है और उत्पादन के साधन भी हैं फिर भी मालिक लोग उत्पादन नहीं करते। एक पर एक उद्योग बंद हो रहे हैं। बम्बई का एक भी कपड़ा मिल आज चालू नहीं है। क्या आदमी की सब जरूरतें पूरी हो गई? इस पूँजीवाद के चलते शोषण करते-करते लोगों को बिल्कुल भिखारी बना दिया है। उनकी जेब में पैसा नहीं है इसलिए उनकी खरीद-शक्ति लगभग न के बराबर है। आज देश के करोड़ों करोड़ लोगों को गाँव-शहर में कल की चिन्ता खाये जा रही है। जब जेब में पैसा नहीं है तो खरीदोगे क्या? खरीदोगे नहीं तो वह उत्पादन क्यों करेगा? आज सभी जगह बाजार की समस्या व्याप्त है। सभी पूँजीवादी देशों में मंदी छाई हुई है। हमारे देश में भी यही हाल है। इस अर्थव्यवस्था में इस समस्या का कोई समाधान नहीं है।

कॉमरेड धर ने कहा कि पूँजीपति वर्ग ने संख्या में इतना कम होते हुए भी सिर्फ उसकी पार्टी के बल पर आजादी के लिए हुए संघर्ष का सारा फल खुद हड़प लिया। शोषणहीन समाज बनाने का क्रान्तिकारियों का सपना पूरा नहीं हुआ। लोगों ने इस संघर्ष में कुर्बानियाँ दी, घर छोड़ा, अपने माँ-बाप की देखभाल नहीं की, अपने बच्चों की परवरिश नहीं की, अपने कॅरियर को नहीं देखा। खुदीराम बोस, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, सुभाष के क्या माँ-बाप नहीं थे? वे भी तो उनकी देखभाल कर सकते थे। शिवदास घोष भी सब कुछ छोड़ कर आजादी की लड़ाई में आये थे। उन्होंने कहा कि अपने पिता के आँसुओं में उन्होंने देश के कोटि-कोटि गरीब जनता के माता-पिताओं के आँसू देखे। उन सभी को मुक्ति की जरूरत है। इसका एक ही रास्ता है वह है मुक्ति-संघर्ष छेड़ने के लिए एक सही कम्युनिस्ट पार्टी चाहिए। क्योंकि कम्युनिस्ट नामधारी सीपीआई सही कम्युनिस्ट पार्टी नहीं है। लोगों ने कहा कि अरे स्टालिन और माओ जब इस पार्टी को मानते हैं तो तुम क्या उनसे भी ज्यादा जानते हो? यह समझाना उस समय बहुत कठिन था। कोई समझ गया तो वह सोचता कि हिन्दुस्तान इतना बड़ा देश है, इतनी बड़ी-बड़ी पार्टियाँ हैं इसमें क्या कभी क्रान्ति कर पाओगे; तुम्हारे पास कोई शक्ति नहीं, घर नहीं, रहने की कोई जगह नहीं, खाने की कोई व्यवस्था नहीं, कुछ भी नहीं, फिर कैसे क्रान्ति करोगे। शिवदास घोष कहते थे कि हाँ ये सब कमियाँ तो हैं फिर क्या करें, जिनको जीवन में समझा कि सच्चे नहीं हैं, नकली हैं, झूठे हैं क्या उनकी गुलामी करोगे, उनकी दलाली करोगे, पूँजीवाद को चलने दोगे? उन्होंने कहा कि अगर आप एक एक व्यक्ति को यह नहीं समझा पाये कि सीपीआई एक सही कम्युनिस्ट पार्टी नहीं है और क्रान्ति करने के लिए एक सही कम्युनिस्ट पार्टी का निर्माण करना होगा, उन्हें यह भरोसा नहीं दिला पाये तो क्या करोगे? क्या गुलामी करोगे? हम तो भले ही सड़क पर मर जाएं लेकिन मरने से पहले एक ईंट तो रख जाऊंगा। शिवदास घोष चले गये। वे सिर्फ एक ईंट नहीं बल्कि पार्टी बना गये और उसे विकसित कर गये। उस समय हमारे देश में कम्युनिस्ट और मार्क्सवाद के नाम पर सिर्फ सीपीआई ही नहीं थी बल्कि सौमेन ठाकुर की

(शेष पृष्ठ 4 पर)

देश के विभिन्न राज्यों में हिरोशिमा दिवस अंतरराष्ट्रीय साम्राज्यवाद–विरोधी दिवस के रूप में मनाया गया

9 अगस्त को त्रिवेन्द्रम में साम्राज्यवाद–विरोधी बैठक का उद्घाटन करते हुए कॉ. माणिक मुखर्जी

त्रिवेन्द्रम में साम्राज्यवाद–विरोधी सम्मेलन

ढाका अन्तरराष्ट्रीय साम्राज्यवाद विरोधी सम्मेलन के आह्वान पर ऑल इण्डिया साम्राज्यवाद–विरोधी फोरम, केरल राज्य चैप्टर ने 6 अगस्त को हिरोसिमा दिवस को साम्राज्यवाद–विरोधी दिवस के रूप में मनाया। 6 अगस्त से 9 अगस्त तक राज्य के विभिन्न जिलों में तरह–तरह के कार्यक्रम आयोजित किये गये। 9 अगस्त को त्रिवेन्द्रम में वाईएमसीए हाल में एक साम्राज्यवाद–विरोधी बैठक आयोजित की गई जिसका उद्घाटन इन्टरनेशनल एंटी–इम्पीरियलिस्ट को–ऑर्डिनेटिंग कमेटी (आईएसीसी) के महासचिव और एसयूसीआई (सी) के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड माणिक मुखर्जी ने किया। एआईएआईएफ केरल राज्य चैप्टर के अध्यक्ष डॉ. एनए करीम ने बैठक की अध्यक्षता की। इसमें राज्य के विभिन्न जिलों के एआईएआईएफ के संगठकों ने शिरकत की। एआईएआईएफ के दोनों उपाध्यक्ष वरिष्ठ ट्रेड यूनियन नेता कॉ. केपी कौसलरामदास व श्री के. भास्करन, एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के केन्द्रीय कमेटी सदस्य व केरल राज्य सचिव कॉ. सीके लुकोस और नंदीपोदे रामचन्द्रन व अन्य वक्ताओं ने बैठक को सम्बोधित किया।

कॉमरेड माणिक मुखर्जी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में वर्तमान अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति पर पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अब दुनिया में हमें साम्राज्यवाद–विरोधी आन्दोलन की प्रगति की जबरदस्त सम्भावनाएं देखने को मिल रही हैं। 90 के दशक में ये हालात नहीं थे। लोग एकध्रुवीय विश्व के खतरे से डरे हुए थे जो समाजवादी खेमे और विभिन्न देशों में कम्युनिस्ट नेतृत्व के पतन से उभर कर आया था। अब हमें यह देखने को मिल रहा है कि लोग पहले से कहीं ज्यादा जोशोखरोश, हिम्मत–हौंसले और समझदारी के साथ दुनिया भर में, यहाँ तक कि खुद अमेरिका में भी लामबंद होते जा रहे हैं। साम्राज्यवाद अपने आखरी दौर में है। यह अपने कफन की इन्तजार में है। आप उस कफन को तैयार करें।

बैठक के अध्यक्ष डॉ. एनए करीम ने हिरोसिमा व नागासाकी में अमेरिकी साम्राज्यवाद की घोर अमानवीय और घिनौनी करतूतों का जिक्र किया। दूसरे विश्व युद्ध के बाद साम्राज्यवादी ताकतों द्वारा विदेशी सीमाक्षेत्रों में प्रत्यक्ष राजनैतिक व सैनिक शासन के बिना कैसे लोगों का शोषण किया जा रहा है इस पर उन्होंने रोशनी डाली। उन्होंने कहा कि वर्तमान दिनों के साम्राज्यवाद–विरोधी आन्दोलन के नेता–कार्यकर्ताओं को साम्राज्यवादी दमन–उत्पीड़न के नये–नये रूपों का मुकाबला करने के लिए वैचारिक व सांगठनिक तौर पर खुद को तैयार करना होगा। कॉ. केपी कौसलरामदास ने भारत के शासक वर्ग द्वारा साम्राज्यवादी ताकतों के जूनियर पार्टनर के तौर पर निभाई गई भूमिका की कड़ी आलोचना की। एआईएआईएफ केरल राज्य चैप्टर के सचिवमण्डल सदस्य जीएस पदमकुमार ने स्वागत भाषण दिया और एआईएआईएफ के त्रिवेन्द्रम जिला संयोजक जीआर सुभाष ने सब का आभार व्यक्त किया।

6 अगस्त को हिरोशिमा दिवस पर इरनाकुलम में एक साम्राज्यवाद–विरोधी बैठक आयोजित की गई। इसका उद्घाटन एआईएआईएफ केरल राज्य चैप्टर के उपाध्यक्ष श्री के. भास्करन ने किया।। बैठक की अध्यक्षता फ्रान्सिस कलाथुंगल ने की। बैठक में सीआई नीलकंठन, जनकीय प्रतिरोध समिति के टीके सुधीरकुमार, पर्यावरण बचाओ कार्यकर्ता सीजी थंपी, कुरुविला मैथ्यू, पीएम दिनेशन व अन्य वक्ताओं ने अपने विचार रखे।

हिरोशिमा दिवस पर कलकत्ता में प्रदर्शन

पटना में साम्राज्यवाद के खिलाफ परिचर्चा

''दुनिया में साम्राज्यवाद के खिलाफ आंदोलन तेज हो रहे हैं। अमेरिका सहित विभिन्न देशों में जन उभार इसके स्पष्ट संकेत हैं। जरूरत है ऐसे आंदोलनों को सही दिशा और सही नेतृत्व की। साम्राज्यवाद, युद्ध और तानाशाही के खिलाफ जन आक्रोश सामाजिक बदलाव के लिए उम्मीद की नयी किरण है।''

उक्त बातें आज गांधी संग्रहालय में ऑल इंडिया एंटी–इम्पीरियलिस्ट फोरम के पटना चैप्टर द्वारा 4 अगस्त को आयोजित ''विभिन्न देशों में जन उभार, साम्राज्यवाद–विरोधी आंदोलन और उसके सबक'' विषयक वार्ता में इंटरनेशनल एंटी–इम्पीरियलिस्ट को–ऑर्डिनेटिंग कमिटी (IACC) के महासचिव कॉ. माणिक मुखर्जी ने कही। उन्होंने कहा कि आज साम्राज्यवाद का सरगना अमेरिका बीती शताब्दी के 30 के दशक के महामंदी से भी ज्यादा मंदी में फंसा है। पूंजीवाद आज अंतिम साँसें गिन रहा है। जन आंदोलनों को रोक पाना, पूँजीवाद को बचा पाना आज उसके लिए संभव नहीं है। 'वाल स्ट्रीट पर कब्जा करो' आंदोलन पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि जनता के इस स्वत:स्फूर्त आंदोलन का काफी प्रभाव पड़ा, काफी फैलाव हुआ। आंदोलनकारी अब बड़े–बड़े बंगलों पर कब्जा करने की बात कर रहे हैं। भारत के परिप्रेक्ष्य में कॉ. मुखर्जी ने कहा कि शहीदों–क्रांतिकारियों की शहादत और कुर्बानियों की बदौलत देश को राजनैतिक आजादी तो मिली, पर जन मुक्ति हासिल नहीं हुई। आज देश में व्याप्त जन समस्याओं को लेकर जन आंदोलन वक्त का तकाजा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता पटना विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्राध्यापक प्रो. ओ. पी. जायसवाल ने की। वार्ता में ए. एन. सिन्हा समाज अध्ययन संस्थान के निदेशक प्रो. डी. एम. दिवाकर, पटना विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्राध्यापक प्रो. पूर्णेन्दु मुखर्जी, डा. सुरेश प्रसाद, सामाजिक कार्यकर्ता अख्तर हुसैन ने अपने विचार रखे। इस मौके पर गांधी संग्रहालय, पटना के सचिव डा. रजी अहमद, जेएनयू के सेवानिवृत्त प्राध्यापक प्रो ईश्वरी प्रसाद, डा. आर.बी. सिंह, अक्षय कुमार, राम नरेश झा, डा. ओम प्रकाश पाण्डेय, कॉलेज ऑफ कॉमर्स के प्राध्यापक प्रो. सफदर इमाम कादरी आदि मुख्य रूप से शामिल थे। वार्ता का संचालन ऑल इंडिया एंटी–इम्पीरियलिस्ट फोरम, बिहार चैप्टर के सचिव अरुण कुमार सिंह ने किया।

पटना में साम्राज्यवाद–विरोधी मार्च

6 अगस्त को हिरोशिमा दिवस के मौके पर इंटरनेशनल एंटी–इम्पीरियलिस्ट को–ऑर्डिनेटिंग कमिटी के आह्वान पर आज ऑल इंडिया एंटी–इम्पीरियलिस्ट फोरम के तत्वावधान में शहीद भगत सिंह चौक से साम्राज्यवाद–विरोधी मार्च निकला गया जो जे. पी. गोलम्बर पहुंच कर सभा में तब्दील हो गया। प्रदर्शनकारी नारे लगा रहे थे 'और हिरोशिमा नहीं चाहिए', 'युद्ध नहीं शांति चाहिए', 'साम्राज्यवाद का नाश हो' 'भारत सरकार जंगखोरों से नाता तोड़ो', 'साम्राज्यवाद के खिलाफ जुझारू शांति आंदोलन तेज करें', 'साम्राज्यवादियों की दादागिरी नहीं चलेगी'।

सभा में वक्ताओं ने कहा कि गरीबी, भूख, महंगाई का कारण साम्राज्यवाद–पूंजीवाद है। जब तक साम्राज्यवाद रहेगा, जंग भी होता रहेगा। आज अमेरिकी साम्राज्यवाद पूरी दुनिया में अपना वर्चस्व कायम करना चाहता है। उसने इराक को तबाह कर दिया, अफगानिस्तान को धूल में मिला दिया। वह कमजोर मुल्कों पर हमले कर रहा है, उन्हें धमकियां दे रहा है। आज दुनिया की जनता साम्राज्यवादियों–पूंजीपतियों के मंसूबों को समझकर कहीं उनके खिलाफ लड़ रही है, तो कहीं उनसे लड़ने का मन बना रही है। साम्राज्यवादी सरगना अमेरिका में भी जनता पूंजीवाद–साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ते हुए 'वाल स्ट्रीट पर कब्जा करो' आंदोलन कर रही है। भारत में भी जनता जन समस्याओं को लेकर आंदोलनरत है। सभी वक्ताओं ने अमेरिकी साम्राज्यवाद द्वारा सीरिया में हस्तक्षेप करने, उत्तर कोरिया को धमकाने की कड़ी निन्दा की और साम्राज्यवाद व युद्ध के खिलाफ जुझारू आंदोलन निर्मित करने की अपील की। सभा को पटना विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्रो. ओ.पी. जायसवाल, पटना विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र के प्रो. नवल किशोर चौधरी, प्रख्यात चिकित्सक डा. शकील, ऑल इंडिया एंटी– इम्पीरियलिस्ट फोरम, बिहार चैप्टर के सचिव अरुण कुमार सिंह आदि ने संबोधित किया। मार्च में पटना विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्रो. पूर्णेन्दु मुखर्जी, नंदीग्राम डायरी के लेखक पुष्पराज, सामाजिक कार्यकर्ता अक्षय कुमार, पुष्प राज, रंगकर्मी मोना झा आदि मुख्य रूप से शामिल थे।

स्मृति सभाएं...

(पृष्ठ 2 का शेष)

आरसीपीआई थी, मानवेन्द्रनाथ राय जो एक बहुत बड़े मार्क्सवादी थे और लेनिन के साथ जिन्होंने काम किया था उनकी डेमोक्रेटिक वेनगार्ड थी, बोल्शेविक पार्टी थी, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की फॉरवर्ड ब्लॉक थी जिन सबका जनता में काफी प्रभाव था। शिवदास घोष के पास पैसों के बल पर लोगों को अपने पक्ष में लाने की क्षमता नहीं थी। उन्होंने कहा हमसे गुलामी नहीं होगी। अगर आप जाना चाहें तो उनके पास चले जाएं। यही कह कर वे लोगों को अपने पक्ष में लाये। शिवदास घोष ने हमें और कुछ नहीं, बल्कि मूल्यबोध दिया, आदर्श दिया, उन्होंने हमें रास्ता दिखाया और चरित्र दिया। वे और क्या देते? इन्सान होने का मतलब है उसमें इन्सानियत होना, चरित्र होना। सर ऊंचा रख कर इन्सान की तरह जीने की राह हमें शिवदास घोष ने दिखाई। पूरी पार्टी को मुक्ति की राह दिखाई और मुक्ति हासिल करने के लिए जो चरित्र चाहिए वह दिया।

कॉ. धर ने कम्युनिस्ट बनने के संघर्ष बारे लेनिन की यह सीख पेश की कि चूंकि हम कम्युनिस्ट बनने की इच्छा-आकांक्षा रखते हैं और कम्युनिस्ट बनना चाहते केवल इसी से हम कम्युनिस्ट नहीं बन सकते। कम्युनिस्ट बनने के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ता है। न केवल अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति बल्कि व्यक्तिगत सम्पत्तिजनित बोध, अपना व्यक्तिगत प्यार-मुहब्बत तक छोड़ना पड़ता है। व्यक्तिवादी मानसिकता, व्यक्ति केन्द्रित सभी भावनाएं जो हमारे मन में रह गई हैं सब छोड़नी पड़ती हैं और समाज के हित में, सभी के हित में, सामूहिक हित में काम करना होता है। हम जिस समाजवाद में जाएंगे उसमें उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत मालिकाने के आधार पर उत्पादन नहीं होगा बल्कि सामूहिक मालिकाना होगा। सामूहिक स्वार्थ देखना होगा। समाज में सभी अपना-अपना श्रम देंगे, जो उत्पादन होगा वह किसी की व्यक्तिगत सम्पदा नहीं बल्कि समाज की सम्पदा होगी और सभी लोगों को मिल बांट कर दिया जाएगा। वह समाजवाद कौन ला पायेगा? हमारा मन जो चाहता है उसी को पूरा करना है, मनचाहा न होने पर मन दुखी हो जाता है। अपनी संतान के प्रति प्यार, अपनी पत्नी के प्रति प्यार, अपने माता-पिता के प्रति प्यार, कर्तव्यबोध, आचार-आचरण आदि सब जो संस्कृति है यह पूँजीवादी समाज से सीखी है जिसमें हमारा जन्म हुआ है जिसमें व्यक्ति को केन्द्र करके, व्यक्तिगत सम्पत्ति के आधार पर व्यक्तिगत मालिकाने, व्यक्तिगत स्वार्थ, व्यक्तिगत इच्छा-आकांक्षा के आधार पर उत्पादन और वितरण होता है। जबकि कम्युनिस्ट बनना है तो सामूहिक स्वार्थ देखना होगा। व्यक्तिगत स्वार्थ छोड़ना होगा। व्यक्तिगत सम्पत्ति, व्यक्तिगत सम्पत्तिजनित बोध, व्यक्तिगत प्यार-मुहब्बत, व्यक्तिगत कमजोरी आदि सब छोड़नी होंगी। इसमें आँसू तो बहेंगे, दुख भी बहुत होगा। व्यक्तिवाद को छोड़ना होगा और सामूहिकता को अपनाना होगा तभी तो आप कम्युनिस्ट बन पायेंगे। व्यक्तिगत मानसिकता को छोड़ने के लिए शिवदास घोष की एक सीख तो यह है कि आदमी के गुण देखो, न कि दोष। हर आदमी गुण-अवगुण लेकर है। दुनिया में ऐसा कोई आदमी नहीं है जिसमें सिर्फ अवगुण ही अवगुण हों, गुण कुछ भी न हों। हमारे मानव समाज में आदमी के गुण को देखने की बजाय उसके दोष, कमी, अवगुण देखने की आदत है। शिवदास घोष कहा करते थे कि हर आदमी प्यार चाहता है। स्नेह-ममता-भावावेग चाहता है। जिसके जीवन में प्यार न हो, उसे प्यार की नजर से देखो, उसे उसके दोषों से मुक्त करो, उसके दोषों को लेकर उस पर ताना मत मारो, आलोचना-चर्चा मत करो। उसकी त्रुटियां मत देखो, गुणों को देखो और गुणों को बढ़ाओ। शिवदास घोष की दूसरी सीख यह है कि अपने को मत देखो, दूसरों को देखो। किसी देश में क्रान्ति करनी हो तो कहा जाता है कि खाओगे कहाँ से, रहोगे कहाँ? इसलिए पहले खाने-रहने की व्यवस्था करो उसके बाद क्रान्ति करना। क्या शिवदास घोष ने खाने-रहने की व्यवस्था की थी तब क्रान्तिकारी बने थे? आप समाज के लिए काम करें तो समाज का हर घर अपना है। ऐसा नहीं हुआ कि दुनिया में कोई क्रान्तिकारी भूख से मर गया, उसे खाना नहीं मिला। समाज ने उसे जिन्दा रखा। गरीब लोग उसे जिन्दा रखते हैं क्योंकि वह समाज के लिए, गरीबों के लिए लड़ रहा है। इसलिए शिवदास घोष ने हमें सिखाया कि दूसरे को देखो, खुद को नहीं। आप दूसरों को देखेंगे तो दूसरे आपको देखेंगे। आप एक-दूसरे को देखो। आप सब को देखोगे तो सभी आदमी आपको देखेंगे। प्यार, स्नेह, ममता, हमदर्दी और भावावेग के साथ लोगों के दुख-दर्द को समझो, उसे दूर करने की कोशिश करो। कुछ न भी कर सको तो कम से कम उसकी बात सुनो। आज स्थिति यह हो गई है कि मन का दुख व्यक्त करने के लिए कोई नहीं मिलता है। सभी अपने दुख की ही बात कहना चाहते हैं। सुनने वाला कोई नहीं है। सुनने से ही दुखी मन कुछ हल्का हो जाता है।

कॉ. धर ने बताया कि सामंती समाज, राजा का शासन जितना विकास सम्भव था उतना कर लेने के बाद उसकी ऐतिहासिक भूमिका खत्म हो जाने से व्यक्ति के विकास में बाधक बन जाने पर पूँजीवाद आया। बुर्जुआ शासन आया। मानवतावाद आया। कब आया? जब समाज संकट से घिरा हुआ था। पुराने नियम से समाज आगे नहीं बढ़ सकता था। नया नियम आया तो समाज फिर आगे बढ़ने लगा। हर दर्शन, हर मतवाद जरूरत के आधार पर दुनिया में आता है। सामंती अर्थव्यवस्था के खिलाफ बुर्जुआ व्यक्ति स्वतंत्रता, समानता, भाईचारे, नारी-मुक्ति, नर-नारी के समान अधिकार, कानून की नजर में सब बराबर का नारा लेकर पूँजीवाद आया था। पूँजीवाद ये सब क्रान्तिकारी धारणाएं लेकर आया था। बुर्जुआ ने सत्ता में आकर सामंती आर्थिक-सामाजिक बंधनों से व्यक्ति को मुक्त किया और समाज विकास का रास्ता खोल दिया लेकिन वह उन घोषित लक्ष्यों को हासिल नहीं कर पाया। पूँजीवाद के आधार पर जितनी दूर तक समाज का विकास सम्भव था उतना हो जाने के बाद आज पूँजीवाद प्रतिक्रियावादी हो गया है। अब समाजवाद-साम्यवाद के रास्ते ही समाज का विकास सम्भव है।

अंत में कॉ. धर ने कहा कि बिना सर्वहारा वर्ग की पार्टी के सर्वहारा क्रान्ति नहीं हो सकती, सर्वहारा की मुक्ति नहीं हो सकती। शिवदास घोष के दिखाये रास्ते पर एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) ही एकमात्र सही सर्वहारा वर्ग की पार्टी है। सीपीआई के रहते एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) बनाने का उनका संघर्ष बहुत ही कठिन था। वे अपने पूरे जीवन-संघर्ष का ज्ञान एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) को देकर चले गये। पार्टी एक मशीन, औजार की तरह होती है। इसे तैयार किया जाता है। पार्टी कुछ लोगों के क्लब जैसी नहीं होती है। एक दर्शन, एक विचारधारा के आधार पर पार्टी का निर्माण होता है। पार्टी बनाने का भी एक विज्ञान होता है। कॉ धर ने मोबाइल, माइक, लेपटॉप आदि का उदाहरण कर सहज ढंग से समझाया कि इनके निर्माण में जैसे मेहनत लगती है और सबकी अलग-अलग निर्माण प्रक्रिया की जानकारी की जरूरत पड़ती है। जिस औजार से माइक बनता है उससे लेपटॉप नहीं बनता है और जिससे लेपटॉप बनता है उससे पंखा नहीं बनता है। वह चीज बनाने लायक औजार न हो तो वह चीज नहीं बन सकती। वैसे ही पार्टी का मामला है। बुर्जुआ वर्ग की पार्टी लूटने, शोषण करने के लिए बनायी जाती है। महंगाई, बेरोजगारी, नारियों पर अत्याचार जो सब आज हो रहा है जिन सब सम्स्याओं की जड़ पूँजीवाद है उनको यह दूर नहीं कर सकती। जैसे गन्ने का रस निकालने वाली मशीन से आप कपड़ा नहीं बना सकते वैसे ही शोषण, लूट करने और मुनाफा कमाने के लिए जिस औजार को बनाया गया उससे शोषण, लूट और बेरोजगारी, महंगाई दूर हो जाएगी ऐसा सम्भव नहीं है। जैसे गन्ने का रस निकालने वाली मशीन से रस ही निकलेगा, कपड़ा नहीं बनेगा वैसे ही पूँजीपतियों ने राजसत्ता पर कब्जा करने के लिए, शोषण करने के लिए जो पार्टी बनायी उससे शोषण तो होगा ही। राजसत्ता भी उन्हीं की और पार्टी भी उनकी है। उसी मशीन से, उसी पार्टी से कम्युनिज्म नहीं आयेगा जिसमें शोषण नहीं रहेगा, अन्याय नहीं रहेगा। इसके लिए अलग प्रक्रिया से अलग पार्टी बनानी होगी। सीपीआई के रहते हुए शिवदास घोष ने सर्वहारा वर्ग की सही क्रान्तिकारी पार्टी एसयूसीआई (सी) इसलिए नहीं बनायी कि उसने अतीत में बहुत भूल की थी। जिन्होंने सीपीआई का निर्माण किया था उन्होंने बहुत त्याग किया था, बहुत कष्ट झेले थे, लोगों को ठगने के लिए भी उन्होने यह नहीं बनायी थी। उनकी हम बहुत श्रद्धा करते हैं, उनको नमन करते हैं। लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी गठन की सही प्रक्रिया का उन्होंने अनुसरण नहीं किया। उस नियम को वे मान कर नहीं चले। इसलिए सीपीआई एक सही कम्युनिस्ट पार्टी नहीं बन पायी। उसके दो-चार पार्ट-पुर्जे बदल कर उसे सही कम्युनिस्ट पार्टी नहीं बनाया जा सकता। इसलिए नई पार्टी बनानी पड़ी। सही कम्युनिस्ट पार्टी बनाने के लिए वह प्रक्रिया है जनवादी केन्द्रीयता जो वैचारिक केन्द्रीयता के आधार पर सांगठनिक केन्द्रीयता लाती है। जो लोग पार्टी बनाने के लिए आयेंगे वे ऐसा नहीं कि पब्लिक में भाषण देंगे तब कम्युनिस्ट होंगे और घर में अपने निजी जीवन में अपनी पत्नी के साथ सम्बन्ध में बुर्जुआ होंगे। सीपीआई-सीपीआई(एम), आरएसपी आदि नामधारी कम्युनिस्ट पार्टियों के नेतागण मुंह से तो कहते थे कि धर्म को नहीं मानते हैं जबकि अपने जीवन में माता-पिता की मृत्यु के बाद श्राद्ध जैसे कर्मकाण्डों का पालन करते थे। सही कम्युनिस्ट पार्टी का निर्माण करना है तो सर्वहारा संस्कृति अपनानी होगी वरना क्रान्ति नहीं कर पायेंगे। शिवदास घोष कहते थे कि पूँजीवाद और व्यक्तिवाद एक ही बात है। लेनिन व माओ के जमाने में जब उन्होंने क्रान्ति की और उस समय कम्युनिस्ट बनने के लिए जो संघर्ष छेड़ा तब पूँजीवाद जिस स्तर में था आज पूँजीवाद उससे भी ज्यादा गहरे संकट में फंस जाने और उससे भी ज्यादा प्रतिक्रियावादी हो जाने के कारण व्यक्तिवाद चरम सीमा पहुंच जाने से कम्युनिस्ट बनने का संघर्ष और भी कठिन हो गया है। शिवदास घोष ने अपने आजीवन संघर्ष के जरिये वह चरित्र हासिल किया जो आज के जमाने में कम्युनिस्ट बनने के लिए जितना ऊंचा चरित्र होना चाहिए। कॉ. धर ने सबसे आह्वान किया कि उसी चरित्र का अनुसरण करना है, उसी को मान कर चलना है, उसी को आदर्श मान कर अपना चरित्र बदल डालने के संघर्ष में उतर जाना है, कम्युनिस्ट बनना है चाहे कितना ही कठिन हो। समझ लीजिए, कम्युनिस्ट बने बिना, सर्वहारा संस्कृति हासिल किये बिना क्रान्ति नहीं होगी। सर्वहारा संस्कृति सामूहिक स्वार्थ के आधार पर बनती है। व्यक्तिगत स्वार्थ आज हावी होने से कम्युनिस्ट बनना आसान नहीं है। शिवदास घोष सबसे ऊंचे दर्जे के कम्युनिस्ट चरित्र की मिसाल पेश कर गये हैं। इसलिए उसको जानें, समझें और संघर्ष करें। हिन्दुस्तान की क्रान्ति आज दरवाजे पर दस्तक दे रही है। उसे इन्तजार है एक पर्याप्त शक्ति रखने वाली क्रान्तिकारी पार्टी की। आज सीपीआई-सीपीआई(एम) आदि पार्टियां बाधा के रूप में आपके सामने नहीं हैं। उन्होंने खुद ही अपने को बेनकाब कर लिया है। आज क्रान्ति के सामने मार्क्सवाद के नाम पर कोई शक्ति नहीं है जो आपको रोक सके। देश में एकमात्र कम्युनिस्ट पार्टी अगर कोई है तो केवल एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) है और जिसने मार्क्सवाद को हिन्दुस्तान की सरजमीन पर समझा वे शिवदास घोष हैं। उनके हाथों से तैयार यही पार्टी क्रान्तिकारी पार्टी है, इसे मजबूत करें, और ताकतवर बनायें, सही कम्युनिस्ट चरित्र अपनायें और गाँव-गाँव में घर-घर में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) का पैगाम पहुंचा दें। यही शपथ लेकर शिवदास घोष को याद करना सार्थक है।

बुढ़लाडा (पंजाब): एसयूसीआई(सी) पंजाब राज्य स्तरीय शिवदास घोष स्मृति सभा यहाँ 6 अगस्त को हुई। सभा की अध्यक्षता पंजाब के पार्टी प्रभारी कॉ. अमिन्दर पाल सिंह ने की। मुख्य वक्ता पार्टी की दिल्ली राज्य सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉमरेड प्रताप सामल थे। कॉ. सामल ने कॉमरेड शिवदास घोष के विचारों पर रोशनी डाली और वर्तमान राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय परिस्थितियों में इन्हें गहराई से जानने-समझने और जीवन में लागू करने की अपील की। सभा को कॉ. अमिन्दर पाल सिंह और इन्द्रजीत सिंह ने भी सम्बोधित किया। उन्होंने कॉ. घोष की रचनाओं का पंजाबी (गुरुमुखी) में अनुवाद करने की जरूरत पर बल दिया।

पटना (बिहार) : सर्वहारा के महान नेता, इस युग के महान मार्क्सवादी चिंतक व दार्शनिक तथा एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के संस्थापक महासचिव कॉमरेड शिवदास घोष के 36 वें स्मृति दिवस के मौके पर 5 अगस्त को एक सभा का आयोजन पटना के पी. एंड टी. हॉल में किया गया। स्मृति सभा के मुख्य वक्ता थे पार्टी के पोलित ब्यूरो सदस्य कॉमरेड माणिक मुखर्जी।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

स्मृति सभाएं...

(पृष्ठ 2 का शेष)

सभा की अध्यक्षता एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) बिहार राज्य सचिव कॉमरेड शिव शंकर ने की। उन्होंने कहा कि सुशासन और विकास की जो भी बातें क्यों न हों, वास्तव में आज सूबे के आम आदमी की जिन्दगी बदहालियों की गिरफ्त में है। बिजली का निजीकरण कर उसे महंगा करने, शिक्षा को कुछ मुट्ठीभर लोगों तक ही सीमित करने तथा राज्य में सामूहिक बलात्कार की घटनाओं के दोषियों को छिपाने की नीतीश सरकार की कारगुजारियों की निन्दा करते हुए उन्होंने आम जनता से इसके खिलाफ उच्च नीति-नैतिकता के आधार पर जन आंदोलन तेज करने की अपील की।

कॉमरेड माणिक मुखर्जी का भाषण :

आपने सुना है, कॉ. शिव शंकर जी ने बताया कि मेरी हिन्दी अच्छी नहीं है। आप कोशिश कीजिए समझने की। उम्मीद है आप यह कोशिश करेंगे। आज का दिन 5 अगस्त हमारी पार्टी सोशलिस्ट युनिटी सेंटर ऑफ इंडिया (कम्युनिस्ट) और इस देश में सर्वहारा वर्ग के लिए यह बहुत ही दुखद दिन है। आज से 35 वर्ष पहले इसी दिन 5 अगस्त को हमारे संस्थापक महासचिव कॉमरेड शिवदास घोष का देहांत हुआ। उनका देहांत तो हुआ, लेकिन उनकी शिक्षाएं समाप्त नहीं हुईं। उनकी शिक्षाओं ने, उनके संघर्ष ने इस देश के सर्वहारा वर्ग की क्रांति को दिशा दी है। उनकी सीख हमारे पास मौजूद है, पूरी जीवंतता के साथ मौजूद हैं। इस दिन हम संकल्प लेते हैं कि कॉमरेड शिवदास घोष का जो सपना था कि यह देश सर्वहारा वर्ग का देश होगा, उसकी अपनी सरकार बनेगी, आदमी के द्वारा आदमी के शोषण का खात्मा होगा, हर व्यक्ति को भोजन-वस्त्र मिलेगा, उसका सही इलाज होगा, उसे पढ़ने-लिखने का अवसर मिलेगा, उसे हम पूरा करेंगे। यह कैसे पूरा हो सकता है? यह तभी हो सकता है जब यह जो पूंजीवादी देश है, पूंजीवाद को खत्म कर, इसे उखाड़ फेंककर समाजवाद कायम किया जाय। तभी सर्वहारा वर्ग का राज कायम होगा। यह राज कायम होना तय है। इसे कोई नहीं रोक सकता है। इस विश्वास को लेकर हमें आगे बढ़ना है।

महान मार्क्सवादी चिंतक कॉ. शिवदास घोष ने हमें दो बातें बतायी पार्टी के निर्माण के दौरान उन्होंने बताया कि इस देश में सर्वहारा की क्रांति के लिए सबसे जरूरी क्या है। सबसे जरूरी है क्रांति का सही सिद्धांत, राजनैतिक लाइन। क्रांति की राजनैतिक लाइन का होना। दूसरी बात है सही क्रांतिकारी पार्टी का होना। तीसरी है क्रांति की सीख देने के लिए एक क्रांतिकारी नेता का होना, जो तमाम देश के सर्वहारा वर्ग को दिशा दिखा सके। इन तीन चीजों के न होने पर किसी भी देश में क्रांति नहीं हो सकती। देखिए, हमारे देश में हम तो आजाद हो गये। 1947 में हमें आजादी मिल गयी। अंग्रेज भाग गये। वे ऐसे ही नहीं भागे। देश की आम जनता की कुर्बानी, संघर्ष की बदौलत उन्हें भागना पड़ा। उस दौरान हमारे देश के राष्ट्रीय नेताओं ने जनता को समझाया था कि जो भी बेरोजगारी, भुखमरी, महंगाई–तमाम तरह की जो जन समस्याएं हैं, वे अंग्रेजों की वजह से हैं। अगर अंग्रेज यहां से चले जायेंगे तो हमारे देश में जो धन-सम्पदा है, वह यहीं रह जायेगी। जनता इसका भरपूर इस्तेमाल कर सकेगी। उन्होंने समझाया था कि अंग्रेजों के चले जाने के बाद देश आजाद हो जायेगा। देश आगे बढ़ेगा। आगे बढ़ने का मतलब हुआ हर इंसान–सर्वहारा वर्ग से लेकर मध्यम वर्ग–सभी को आर्थिक आजादी मिलेगी। भोजन, रोजगार, शिक्षा कोई भी समस्या नहीं रहेगी। लेकिन देखिए, आजादी मिले इतने साल हो गये। जरा सोचिए, आज अंग्रेज नहीं हैं। लेकिन उनकी पार्टियां तो हैं। कांग्रेस पार्टी है, भाजपा है, समाजवादी पार्टी है, ढेर सारी पार्टियां हैं। ये सभी पार्टियां एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। ये सभी एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। पूछिए, क्या हुआ? इतने साल हो गये। अब तो अंग्रेज नहीं हैं। अब तो मनमोहन सिह हैं, सोनिया जी हैं, वाजपेयी जी थे, आडवाणी जी थे। आज देश के लोग भूख से क्यों मरते हैं? किसान आत्म हत्या क्यों करते हैं? रोजगार के लिए लोग मारे-मारे फिर रहे हैं। फिर भी रोजगार क्यों नहीं मिल रहा है? बाजार में हर चीज का दाम आसमान छू रहा है। गरीब, आम जनता खाने का सामान खरीद नहीं पा रही है। ऐसा क्यों हुआ? इसका कोई कारण तो जरूर होगा न? हमें इस बात को अच्छी तरह से समझना होगा कि किस कारण से हमारे जीवन में, सामाजिक जीवन में यह बदहाली आयी? हमारे देश में धन-सम्पदा तो कम नहीं है। 8-9 परिवारों के पास करोड़ों रुपये हैं। उनमें एक मित्तल है। आप लोगों ने उसका नाम सुना है। वह लंदन जाकर इंडस्ट्री खरीद रहा है। कितने रुपये हैं उसके पास! आज दुनिया के सबसे अमीर 20 लोगों में भारत के 3 लोग हैं। देश तो गरीब है न! गरीब देश में मित्तल की तरह, टाटा की तरह, बिड़ला की तरह, अम्बानी की तरह अमीर लोग हैं, जिनके पास रुपये रखने की जगह नहीं है। और, आम आदमी की क्या स्थिति है? वह मर रहा है। ऐसी स्थिति क्यों बनी? हमारे देश में जो आजादी आंदोलन हुआ, उसमें आम जनता लड़ी। वह नेताओं पर भरोसा करके लड़ी। लेकिन उसे वास्तव में क्या मिला? कुछ भी नहीं मिला। आम जनता गरीब से गरीब हुई और कुछ मुट्ठीभर लोगों की सम्पदा लगातार बढ़ रही है।

सभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड माणिक मुखर्जी

इससे कुछ लोगों के मन में यह विचार आया कि इस देश में कुछ भी नहीं हो सकता। जिन्हें आप बुद्धिजीवी कहते हैं, इंटेलेक्चुयल कहते हैं, उनका कहना है कि हमारे देश में आबादी काफी बढ़ गयी है। उसी के चलते ये सारी समस्याएं हैं। अगर आबादी कम हो जाय, तो सारी समस्याओं का समाधान हो जायेगा। यह असल कारण नहीं है। आबादी बढ़ गयी है, इसका मतलब क्या है? आबादी बढ़ने का मतलब है देश में काम करने वाले, श्रम करने वाले, जिस श्रम से हमने इस सभ्यता का निर्माण किया है, वह बढ़ रहा है। श्रम बढ़ने से तो सभ्यता का और विकास होगा। इसलिए यह झूठ है कि आबादी बढ़ने के चलते समस्याएं बढ़ रही हैं। देखिए, जिस चीन ने समाजवाद कायम किया था, पहले उसकी स्थिति क्या थी? वहां भी काफी आबादी थी। क्या वहां समाजवाद नहीं आया? जो लोग सोचते हैं कि हमारे देश में कुछ नहीं होगा, वे ठीक नहीं सोचते हैं। यह निराशा है। अगर हम सही रास्ते पर न चलें तो हमें मंजिल नहीं मिलेगी। आपको जाना है कोलकाता और आपने रास्ता पकड़ लिया दिल्ली का। तब तो आप कोलकाता नहीं जा सकते। आप दिल्ली चले जायेंगे। इसलिए रास्ता सही होना चाहिए। कॉमरेड घोष ने बताया कि हमारे देश में जो आजादी आयी है, वह आजादी अमीरों के लिए है, पूंजीपतियों के लिए है, गरीब-मध्यम वर्ग के लोगों के लिए नहीं है। उन्होंने 1948 में ही इस बात को बताया था। साथ ही उन्होंने बताया था कि यह आजादी सही सर्वहारा वर्ग की पार्टी, जिसे कम्युनिस्ट पार्टी कहते हैं, के नेतृत्व में आती तो समाजवाद आ जाता। लेकिन हमारे देश में उस दौरान कोई सही कम्युनिस्ट पार्टी नहीं थी। कम्युनिस्ट नामवाली जो पार्टी थी, वह दरअसल सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी थी। कम्युनिस्ट नाम था उसका। लेकिन वह वास्तव में कम्युनिस्ट पार्टी नहीं बन पायी। कोशिश थी उसकी। उसके बहुत-से नेताओं ने उसे ऐसा बनाने की कोशिश की। लेकिन उसे सही रास्ता नहीं मिला।

कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया कि हमारे देश में एक सही क्रांतिकारी पार्टी की जरूरत है। इसलिए उन्होंने एक नयी पार्टी बनायी। वह पार्टी है सोशलिस्ट युनिटी सेंटर ऑफ इंडिया (कम्युनिस्ट)। आज जितने सर्वहारा हैं, शोषण पीड़ित जनता है सब लोगों को समझना है एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के नेतृत्व में यदि हम नहीं लड़ेंगे, तो पूंजीवाद बना रहेगा, शोषण बना रहेगा, बेरोजगारी बढ़ेगी, महंगाई बढ़ेगी। ये सारी चीजें यथावत् जारी रहेंगी। इसके खिलाफ ताकतवर आंदोलन, जन आंदोलन की जरूरत है। इसलिए आज यह गंभीर मसला है।

दो चीजें जरूर ध्यान में रखनी चाहिए। जो लोग समाजवाद लायेंगे, पार्टी नेता और कॉमरेड, उन्हें तो पहले क्रांतिकारी-समाजवादी चरित्र हासिल करना होगा। इसका मतलब क्या है? इसका मतलब है हम क्रांतिकारियों ने सर्वहारा वर्ग के लिए अपने स्वार्थ का परित्याग कर दिया। सर्वहारा वर्ग के साथ हम लोग रहते हैं और उसको लेकर आंदोलन का निर्माण करते हैं। यदि आप कम्युनिस्ट नहीं बन सके, आप क्रांतिकारी नहीं बन सके, तो क्रांतिकारी आंदोलन के लिए नेतृत्व कैसे पैदा होगा? यह है पहली बात। दूसरी बात है, आज तो भारत में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) एक बड़ी पार्टी है, छोटी पार्टी नहीं है। लेकिन हमारी समस्या यह है कि हम लोग काम करते हैं, कार्यक्रम करते हैं, हमारे कार्यकर्ता घर-घर जाते हैं, कोष संग्रह करते हैं, पार्टी अखबार बेचते हैं, सभा करते हैं, जुलूस करते हैं–यह सारा कुछ करते हैं। लेकिन जनता के बीच, जनता के साथ घुलमिल कर रहना, जिसे मास लाइफ कहते हैं, इसको लेकर हमारी पार्टी में काफी कमी है। मास लाइफ अभी तक हम शुरू नहीं कर पाये हैं। मास लाइफ का मतलब क्या होता है? मान लीजिए, पार्टी के जितने समर्थक हैं, उनके जो रिश्तेदार हैं, उन्हें रिश्तेदारों से प्यार होता है। वे उनके घर जाते हैं। आप जिस मुहल्ले में रहते हैं, आम लोगों के साथ रिश्तेदारों जैसा रिश्ता बनाना जरूरी है। हमें उनके घरों में जाना है। हमें उनके साथ खून के रिश्ते जैसा रिश्ता कायम करना है। आम जनता हमें प्यार करे, हमारा सम्मान करे। वे ऐसा महसूस करें कि क्रांतिकारी पार्टी एसयूसीआई (सी) का कार्यकर्ता हमारे घर का लड़का है, हमारे घर की लड़की है। वे मेरे बेटे-बेटियों जैसे हैं, मेरे भाई-बहन जैसे हैं। यदि ऐसा रिश्ता हम तैयार नहीं कर सके, तो मास लाइफ कायम नहीं होगी। ऐसा रिश्ता बना पाने पर ही आप मास लाइफ कायम कर सकते हैं।

आज यह बात काफी लोग मानते हैं कि जितने भी जन आंदोलन होते हैं, एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) ही जन आंदोलन करती है। जो आंदोलन होते हैं, ज्यादातर जगहों पर एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के कार्यकर्ता उसमें शामिल रहते हैं। जनता मानती है कि एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) आंदोलन की एक बड़ी ताकत है। लेकिन जो जनता हमें देखती है, अखबार-टीवी के प्रचार के जरिये नहीं, आंदोलन में, उस जनता के साथ हमारा रिश्ता रिश्तेदारों जैसा होना चाहिए। ऐसा रिश्ता नहीं बनने पर क्रांतिकारी पार्टी का प्रभाव कैसे बढ़ेगा? कॉ. घोष ने हमें बार-बार सीख दी कि जनता अगर सही मायने में समझ गयी है कि यह पार्टी जनता के लिए लड़ती है, तो वह आपको खिलाएगी, आपको सोने की जगह देगी, आपको सुरक्षा प्रदान करेगी। अगर पुलिस आपकी तलाश कर रही है किसी केस में, तो जनता आपको इस घर में, उस घर में छिपाकर रखेगी। पुलिस ढूंढ़ नहीं पायेगी। हमारा रहना जनता के घर में होगा। वह हमें पैसे देगी, हमें भोजन कराएगी, हमें आदर करेगी। क्योंकि उसे पता है कि यह तो अपने लिए कुछ भी नहीं करता है। इसने सब कुछ छोड़ दिया। नौकरी छोड़ दी, परिवार छोड़ दिया। रुपये-पैसे का लालच नहीं है। यह निस्वार्थी है। इसके जीवन में सिर्फ विचार है। यह तो विचार के आधार पर अपने जीवन को संचालित कर रहा है। यह मर जायेगा, लेकिन झूठ नहीं बोलेगा। इसलिए क्रांतिकारियों की हिफाजत जनता खुद करती है, सर्वहारा वर्ग करता है। आप माओ-त्से तुंग को जानते हैं। वे चीन के काफी बड़े नेता थे। उन्होंने काफी अच्छी बात कही कि अगर पानी से

(शेष पृष्ठ 6 पर)

स्मृति सभाएं...

(पृष्ठ 5 का शेष)

मछली को अलग कर दिया जाय, तो वह मर जायेगी। पानी में रहने पर वह जीवित रहेगी। क्रांतिकारियों के लिए भी यही बात है। जनता पानी है। जनता के बीच, उसके मन में, उसके घर में हमारी पैठ होनी चाहिए। उससे हमारा पूर्ण जुड़ाव होना चाहिए। इस मामले में हमारी कमी है। हमारे कॉमरेड काफी लगनशील हैं। पार्टी के कहने पर वे सुबह से शाम तक बिना खाये-पीये काम करते हैं। लेकिन उनका काम करने का तरीका सही नहीं है। काम करने के तरीके में सुधार होना चाहिए।

हमें जनता को, जिससे हमारा रिश्तेदारों जैसा नाता है, जो हमें प्यार करते हैं, उन्हें समझाना होगा कि चुनाव बार-बार आयेगा। चुनाव में आप भाग लेंगे। आप सरकारों की अदला-बदली करेंगे। यह सब ठीक है। लेकिन इससे तो क्रांति नहीं होगी। संसद पर कब्जा करने के जरिये क्रांति नहीं होगी। मैं एक उदाहरण दे रहा हूं। हमारी पार्टी क्रांतिकारी पार्टी है। मान लीजिए वह संसद में बहुमत में आ गयी। मान लीजिए हमारी पार्टी के महासचिव प्रधानमंत्री बन गये। इससे क्या होगा? क्या इससे क्रांति हो जायेगी? समाजवाद आ जायेगा? इससे कुछ भी नहीं होगा। हम जनता से झूठ नहीं बोल सकते। इससे समाजवाद नहीं आयेगा। वास्तविक क्रांति नहीं होगी। असली क्रांति के लिए लड़ाई चाहिए, संघर्ष चाहिए। इसके लिए एक अलग किस्म की राजसत्ता कायम करनी होगी। देखिए, हम जो जन आंदोलन की बात करते हैं, क्रांतिकारियों के लिए उसके दो मायने होते हैं। एक है आंदोलन की मांगों को सरकार से हासिल करना। इसका राजनैतिक उद्देश्य यह होता है कि उस आंदोलन में आम जनता आने पर वह आंदोलन से क्रांति की सीख हासिल करती है। समाजवाद कैसे निर्मित होगा–इसकी उसे सीख मिलती है। उसकी राजनैतिक चेतना बढ़ती है। आंदोलन में भाग लेने के दौरान उसे पता चलता है कि कौन उसका दुश्मन है और कौन उसका दोस्त है? कौन दोस्त की तरह दिखता है, लेकिन वास्तव में वह दुश्मन है? कौन पार्टी सही और कौन पार्टी गलत बात बताकर हमें दिग्भ्रमित करती है। ये सारी चीजें उसे आंदोलन के दौरान मालूम होती हैं। आंदोलन में हम जन कमिटी की बात करते हैं। हम कहते हैं कि आंदोलन के दौरान जनता को लेकर कमिटी बनाइए। एक है पार्टी कमिटी। दूसरी है जन आंदोलन का नेतृत्व देने के लिए जन कमिटी। जन कमिटी का मतलब यह हुआ कि वो मूल फोर्स होगी। अगर नेतृत्व देने की ताकत, सीख-समझ जनता में आ जाय, तो भविष्य में यही जन कमिटी पुरानी राजसत्ता को खत्म कर नयी राजसत्ता को जन्म देगी। गांव-देहात में बीडीओ होते हैं। यह उसी तरह की राजसत्ता को जन्म देगी। तब जनता की राजसत्ता कायम होगी, समाजवाद कायम होगा। कोई पूछ सकता है कि हमारी पार्टी चुनाव में क्यों भाग लेती है? जनता में चुनाव के बारे में लोगों में मोह है। जब तक यह मोह बना रहेगा, तब तक हमें चुनाव में भाग लेते रहना होगा। हम आम जनता को बताते हैं कि चुनाव से कुछ होने वाला नहीं है। चुनाव से क्रांति नहीं होगी। क्रांति के लिए लड़ना होगा, खून बहाना होगा। यही शिक्षा हमें जनता को देनी है। देखिए दिन बदल रहे हैं। 1990 में जब सोवियत समाजवादी समाज का विघटन हुआ, तो पूरी दुनिया में काफी निराशा छा गयी थी। लेकिन उस समय भी हमारे महान नेता कॉ. शिवदास घोष की सीखों के आधार पर हमारे तत्कालीन महासचिव कॉ. नीहार मुखर्जी ने कहा था कि यह निराशा-हताशा का दौर ज्यादा दिनों तक नहीं रहेगा। कुछ ही दिनों के अंदर जनता के अंदर की यह निराशा खत्म हो जायेगी, क्योंकि पूरी दुनिया में आज पूंजीवाद मरणासन्न स्थिति में है। अमेरिका को देखिए, ब्रिटेन को देखिए, यूरोप को देखिए। हर जगह एक जैसी स्थिति है। इसका सकारात्मक पक्ष यह है कि दुनिया में हर जगह, यहां तक कि अमेरिका में भी वहां की जनता आज लड़ रही है। क्या किसी ने सोचा था कि अमेरिका की जनता इस तरह से पूंजीवाद के खिलाफ लड़ेगी? पिछड़े देशों में, तीसरी दुनिया के देशों में जनता का संघर्ष हुआ करता था, मध्य-पूर्व में जनता लड़ा करती थी। लेकिन अमेरिका की जनता भी एक दिन जाग उठी। 'वाल स्ट्रीट पर कब्जा करो' आंदोलन तेज हो गया। अमेरिकी जनता ने नारा लगाना शुरू किया कि पूंजीवाद नहीं चलेगा, साम्राज्यवाद मुर्दाबाद, समाजवाद चाहिए। साम्राज्यवादी देशों की जनता में भी यह चेतना पैदा हो गयी।

इसलिए हमारे शिक्षक कॉ. शिवदास घोष ने बताया कि क्रांति के लिए वस्तुगत स्थिति पूरी तरह से तैयार है। जिस चीज की जरूरत है, वह है क्रांति को नेतृत्व देने लायक सही क्रांतिकारी पार्टी। अगर सही क्रांतिकारी पार्टी के नेतृत्व में क्रांति आती है, तो समाजवाद स्थापित होगा, पूंजीवाद का खात्मा हो जायेगा, साम्राज्यवाद का खात्मा हो जायेगा। हम कह सकते हैं कि भारत की भी यही स्थिति है। क्रांति के लिए जमीन तैयार है। जरूरत है पार्टी को मजबूत करने की, हर राज्य में पार्टी को आगे बढ़ाने की, आंदोलन को तेज करने की। इसकी संभावना भी है। हमारी कमजोरी यह है कि हमारे कार्यकर्ता तो बहुत अच्छे हैं, लेकिन वे जनता के अपने आदमी नहीं बन पाये हैं। उन्हें जनता का अपना आदमी होना चाहिए। आज 5 अगस्त को जब हम अपने नेता, शिक्षक कॉमरेड शिवदास घोष को याद कर रहे हैं, उनकी सीखों को, उनके चिंतन को याद कर रहे हैं, तो हमारे सामने काफी संभावनाएं दिखाई दे रही हैं। कॉमरेड शिवदास घोष ने जो हमें दिशा प्रदान की, उस दिशा के आलोक में यदि हम जन आंदोलन का निर्माण कर सकें, तो काफी परिवर्तन हो जायेगा। समाजवाद कायम होने की वस्तुस्थिति पैदा हो जायेगी।

देखिए, लोगों में काफी असंतोष है। खाना नहीं है, रोजगार नहीं है, शिक्षा नहीं है। जो लोग खेती-बाड़ी करते हैं, वे मर रहे हैं, आत्म हत्या कर रहे हैं। महंगाई बढ़ रही है। हमारे देश में भूखमरी के चलते गांव-देहात में भी हमारी मां-बहनें वेश्यावृत्ति अपना रही हैं। इस समाज में काफी गिरावट आ गयी है। वे जीने के लिए इस तरह का रास्ता चुन रही हैं। दुख तो है न। हर आदमी को दुख है। यदि सही दिशा मिल जाय, तो आग जल जायेगी। इसे रोकने की ताकत किसी में नहीं है।

देखिए न, अन्ना हजारे आये थे भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन करने। देश के लाखों लोगों ने उनका साथ दिया। क्यों? लोग ऐसे ही उनके साथ नहीं गये। आम जनता में जो क्षोभ है, उसकी वजह से लोग उनके साथ जुड़े। सबने सोचा कि अन्ना हजारे का साथ देने से भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन आगे बढ़ेगा। इसलिए सभी ने इनका साथ दिया। उस समय हमारी पार्टी ने कहा था कि इसके साथ आप महंगाई, बेरोजगारी की समस्या–इन मुद्दों को जोड़ दीजिए। उन्होंने इन्कार कर दिया। आज देखिए, वे पार्टी बनाने की बात कर रहे हैं। यह किस तरह की पार्टी होगी? यह पार्टी होगी दक्षिणपंथी सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी। यह पूंजीपतियों की मदद करेगी। यह आम जनता के लिए नहीं लड़ेगी। आप देख रहे हैं अन्ना हजारे का क्या हश्र हुआ। इसलिए अच्छी पार्टी, सही पार्टी को जनता को पहचानना होगा। वास्तविक स्थिति यह है कि क्रांति के लिए स्थिति काफी अनुकूल है।

कॉमरेड, आज जो हम यहां इकट्ठे हुए हैं, हमें संकल्प लेना है कि हम घर-घर जायेंगे, लोगों से रिश्ता कायम करेंगे, उन्हें आंदोलन में शामिल करवायेंगे। आंदोलन के कार्यक्रम हम लेते हैं। अनेक राज्यों में बड़े-बड़े आंदोलन हो रहे हैं। यहां भी आप लोगों ने थोड़ा-बहुत आंदोलन किया है। आंदोलन ही एकमात्र विकल्प है आपके पास। जनता कमिटी का निर्माण कर आंदोलन में नेतृत्व देगी पार्टी द्वारा दिये गये दिशा के आलोक में। आपका नारा यही होना चाहिए। हमारे देश में जो वामपंथी पार्टियां हैं, सीपीआई, सीपीआई (एम), कहीं-कहीं नक्सलपंथी-माओवादी, इनमें से कोई भी पार्टी सही क्रांतिकारी पार्टी नहीं है। सीपीआई (एम) की घोषित नीति है कि भारत में जनगणतांत्रिक क्रांति होगी। भारत का जो पूंजीपति वर्ग है, क्रांति में वह उसका मित्र बनेगा। ऐसी स्थिति में सीपीआई (एम) कैसे पूंजीवाद के खिलाफ संघर्ष करेगी। सीपीआई की भी यही राजनीति है। बारीकी से देखा जाय तो नक्सलपंथियों-माओवादियों का भी जो राजनैतिक विश्लेषण है, राजनीति है, वह है कि हमारा देश अर्ध औपनिवेशिक-अर्ध सामंती है। इसका मतलब होता है कि हमारे यहां जो पूंजीपति वर्ग है, बड़े पूंजीपति हैं, क्रांति में उनकी भूमिका अब भी बनी हुई है। जबकि आज पूंजीपति वर्ग जनता की क्रांति के लिए दुश्मन नम्बर एक है। हमें इसका मुकाबला करना होगा। उसे परास्त करना होगा।

जन आंदोलन, जिसे हम स्कूल ऑफ कम्युनिज्म कहते हैं, क्रांति की पाठशाला कहते है इस जन आंदोलन से जनता को क्रांति सीखाइए। जनता के बीच जाइए। कॉ. शिवदास घोष की इन्हीं सीखों को यदि हम देश के कोने-कोने में ले जा सके तो क्रांति करने में ज्यादा दिन नहीं लगेंगे। किसी देश ने कल्पना में भी नहीं सोचा था, सपने में भी नहीं सोचा था कि अमेरिका की जनता क्रांतिकारी आंदोलन में आ जायेगी। पूंजीवाद अब मृत्यु शैय्या पर है। उसे एक धक्का देने की जरूरत है, आंदोलन का धक्का। तब वह खत्म हो जायेगा।

कॉमरेड, हम जानते हैं कि आप दूर-दूर से आये हैं। इसलिए ज्यादा भाषण की जरूरत नहीं है। आप संकल्प लीजिए कि हम कॉमरेड शिवदास घोष के उस सपने को कि देश में सर्वहारा वर्ग को मुक्त करना, क्रांति करना, समाजवाद लाना, पूंजीवाद को उखाड़ फेंकना–इस रास्ते पर हम चलेंगे और इस विचार को हम जनता के बीच ले जायेंगे। यही सीख लेकर आज आप इस सभा से वापस जायेंगे। ऐसा हमारा विश्वास है। इसी विश्वास और अपील के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

बदलापुर, जौनपुर (उत्तर प्रदेश) : 12 अगस्त को इस युग के महान मार्क्सवादी दार्शनिक कॉमरेड शिवदास घोष के स्मृति दिवस के अवसर पर सल्तनत बहादुर इन्टर कॉलेज बदलापुर के सभागार में एसयूसीआई(सी) की राज्य स्तरीय सभा हुई। सभा में राज्य के तमाम जिलों से पार्टी के समर्थकों, हमदर्दों व कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। सभा की अध्यक्षता पार्टी के राज्य सचिव कॉ. वी.एन. सिंह ने की। मुख्य वक्ता थे एसयूसीआई(सी) पार्टी के बिहार राज्य कमेटी के वरिष्ठ सदस्य कॉ. अरुण कुमार सिंह। सभा का संचालन पार्टी के प्रदेश कार्यालय सचिव कॉ. जगन्नाथ वर्मा ने किया। सभा को कॉमरेड स्वपन चटर्जी व मुख्य वक्ता ने सम्बोधित किया। वक्ताओं ने कॉ. शिवदास घोष के जीवन-संघर्ष पर चर्चा करते हुए वर्तमान आर्थिक, राजनैतिक व सामाजिक परिस्थितियों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि पूँजीवादी व्यवस्था जनजीवन को चौतरफा तबाह कर रही है। ऐसे में कॉमरेड घोष के विचारों की रोशनी में पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति को सफल करना होगा।

सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. अरुण सिंह

जेपी नगर : 6 अगस्त को एसयूसीआई(सी) जिला जेपी नगर ने गाँव अखबंदपुर में कॉमरेड शिवदास घोष स्मरण दिवस मनाया। इस अवसर पर हुई सभा की अध्यक्षता पार्टी के जिला इंचार्ज कॉ. शील कुमार ने की। मुख्य वक्ता थे पार्टी के उत्तर प्रदेश राज्य कमेटी के कार्यालय सचिव कॉमरेड जे. वर्मा। सभा का संचालन कॉ. गम्भीर सिंह ने किया। सभा को कॉमरेडस ऋतु चौधरी व राजेन्द्र सिंह एडवोकेट ने भी सम्बोधित किया।

गुजरात : 8 अगस्त को बड़ोदरा के वांकड़ हाल में गुजरात राज्य स्तरीय एक सभा का आयोजन कॉमरेड शिवदास घोष स्मृति दिवस मनाने के लिए किया गया। सभा की अध्यक्षता गुजरात राज्य सांगठनिक कमेटी सदस्य कॉमरेड मीनाक्षी जोशी द्वारा की गई। सभा की मुख्य वक्ता पार्टी की केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉमरेड छाया मुखर्जी थी। अन्य वक्ता थे गुजरात राज्य सांगठनिक कमेटी सचिव कॉमरेड द्वारका नाथ रथ और पार्टी के बड़ौदा जिला सांगठनिक कमेटी सचिव कॉमरेड तपन दासगुप्ता।

सभा की मुख्य वक्ता कॉमरेड छाया मुखर्जी ने अपने भाषण के दौरान कहा कॉमरेड शिवदास घोष के स्मृति दिवस पर हमें अपने देश की मौजूदा स्थिति का विश्लेषण करने की जरूरत है और पता लगाना है कि क्या इन समस्याओं से मुक्ति पाना संभव है। उन्होंने कहा हम सब चाहते हैं कि सभी को उचित खाना, आवास, शिक्षा, रोजगार और सम्मानित जीवन मिले। लेकिन आज हम क्या देख रहे हैं कि केवल मुट्ठीभर अमीर लोगों को

(शेष पृष्ठ 7 पर)

स्मृति सभाएं...

(पृष्ठ 6 का शेष)

तमाम तरह की सुख-सुविधाएं उपलब्ध हैं जबकि बहुसंख्यक आम आदमियों को भर पेट खाना तक नसीब नहीं है। उन्होंने कहा कि इस स्थिति से निजात पाने के लिए सही वैज्ञानिक तरीके से क्रान्ति को अंजाम देना जरूरी है। उन्होंने कहा कि हमारा देश प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर है। लोग यहाँ मेहनत से काम करना चाहते हैं लेकिन इसके लिए उन्हें कोई अवसर नहीं मिलता है। बेरोजगारी सर्वव्याप्त है। लाखों छात्रों-नौजवानों, महिलाओं ने आजादी आन्दोलन में इस सपने के साथ हिस्सा लिया था कि आजाद भारत में सभी को रोजगार मिलेगा। लेकिन हम क्या देख रहे हैं कि आजादी के बाद जो शासकगण सत्ता में आए उन्होंने केवल कुछ पूँजीपतियों की सेवा इस हद तक की है कि दुनिया के 10 सबसे धनाढ्य लोगों की सूची में 4 भारतीय पूँजीपतियों के नाम शामिल हैं। जबकि आम आदमी का खून निचोड़ा जा रहा हैं। उन्होंने कहा कि यह विभाजन, ये तमाम समस्याएं हमारे देश में मौजूदा पूँजीवादी व्यवस्था की वजह से हैं। इन समस्याओं से मुक्ति पाने के लिए हमें पूँजीवाद को उखाड़ फेंकना होगा और समाजवाद कायम करना होगा जहाँ अमीर और गरीब को कोई भेद नहीं रहेगा। और इस तरह की व्यवस्था कायम करना संभव है। लेकिन इस काम को पूरा करने के लिए प्राथमिक जरूरत है सर्वहारा की सच्ची क्रान्तिकारी पार्टी की। कॉमरेड शिवदास घोष ने इस जरूरत को महसूस किया। मात्र 20-21 वर्ष की कमसिन उम्र के अपने चन्द सहयोद्धाओं के साथ ऐसी पार्टी बनाने का कष्टसाध्य संघर्ष शुरू किया। उनके पास सिर छिपाने को जगह नही थीं, खाने की कोई व्यवस्था नहीं थी, कोई फाइनेन्शियल बैकिंग नहीं थी। उन्होंने कई-कई दिनों तक बिना खाए, फुटपाथ पर सोकर संघर्ष किया। उस समय बहुत सी ताकतवर पार्टियाँ थी कम्युनिस्ट नाम लेकर चलने वाली कई पार्टियाँ थी। लोग यह कहकर हतोत्साहित करते थे कि इतनी छोटी पार्टी इतने किशोर उम्र के लड़कों को लेकर क्या कर सकेगी। वे यह भी सलाह देते कि यदि आप समाज के लिए काम करना ही चाहते हो तो किसी मौजूदा पार्टी में शामिल हो जाओ। लेकिन कॉमरेड शिवदास घोष और उनके कॉमरेडों ने कहा कि मौजूदा पार्टियों में से कोई भी सच्ची क्रान्तिकारी पार्टी नहीं है। आज देश की सबसे बड़ी जरूरत है एक सच्ची कम्युनिस्ट पार्टी। ऐसी पार्टी का निर्माण करने के लिए जो कुछ भी जरूरी है हम करेंगे। इसके लिए यदि हमें अपना जीवन तक कुर्बान करना पड़े तो हम वह भी करेंगे। यहाँ तक कि यदि हम अपने जीवन काल में ऐसी एक पार्टी का निर्माण करने में सक्षम नहीं हुए तो भी हम अपना जीवन ऐसी पार्टी के निर्माण के प्रयास में लगा देंगे और कम से कम इसकी नींव का एक पत्थर तो रख सकेंगे। आने वाली पीढ़ी हमारे काम को आगे बढ़ाएगी।

कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया था कि यदि तत्कालीन अविभाजित कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इण्डिया सच्ची कम्युनिस्ट पार्टी होती तो आजादी आन्दोलन का फल हमारे देश के पूँजीपतियों के हाथों हड़पा नहीं जाता। यदि तत्कालीन सीपीआई ने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का समर्थन किया होता और उनके आन्दोलन को मजबूत किया होता तो तस्वीर कुछ दूसरी ही होती। सीपीआई ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन का भी समर्थन नहीं किया था बल्कि अंग्रेजों की मदद की थी। इसका कारण था कि वे मार्क्सवाद की गलत समझ होने की वजह से स्थिति को समझने में पूरी तरह नाकाम रहे। खुद को मार्क्सवादी होने का दावा करने से ही या मार्क्सवादी होने की चाह रखने से ही कोई तुरन्त मार्क्सवादी नहीं बन जाता है। इसके लिए सही दिशा में कष्टसाध्य संघर्ष संचालित नहीं कर पाए इसीलिए एक सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी में परिणत हो गए–एक पार्टी जो क्रान्तिकारी नारे लगाती है लेकिन सेवा पूँजीपतियों की करती है और इसलिए समय की पुकार को मद्देनजर रखते हुए कॉमरेड शिवदास घोष ने भारत में एक सच्ची मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी के निमार्ण का संघर्ष शुरू किया। पार्टी जिसकी स्थापना उन्होंने पश्चिम बंगाल के एक छोटे से गाँव में की थी आज देश के 21 राज्यों में जन आन्दोलनो का निर्माण कर रही है।

सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. छाया मुखर्जी

उन्होंने कहा कि आज लोग सभी पार्टियों से निराश हो चुके हैं। इसका कारण है कि इन पार्टियों में से कोई भी लोगों के लिए काम नहीं करती है। चुनावों के दौरान इन सभी पार्टियों के नेतागण दावा करते हैं कि वे देश के किसान-मजदूरों, आम आदमी के लिए काम करते हैं लेकिन यदि यह सच है तो क्यों किसान-मजदूर और आम आदमियों की हालत आज इतनी दयनीय है। लाखों किसान आत्म हत्याएं कर रहे हैं कृषि में दिए जाने वाले अनुदानों में लगातार कटौती की जा रही है, कृषि उत्पादों को कोल्ड स्टोरेज में रख कर बिचौलिए अधिकतम मुनाफा कमा रहे हैं और मुद्रास्फीति बढ़ाते हैं जबकि इन कृषि उत्पादों के उत्पादकों को इन्हें कौड़ियों के भाव बेचना पड़ता है। हमारे देश में मजदूरों को न्यूनतम वेतन तक नहीं मिलता है। बहुत पहले कार्ल-मार्क्स ने दिखाया था कि मजदूरों का शोषण किए बिना पूँजीपतियों के लिए मुनाफा कमाना संभव नहीं है। पूँजीपति तर्क देते हैं कि हम पूँजीनिवेश करते हैं और कच्चा माल खरीदते हैं, लेकिन यदि मजदूर काम न करे तो यह पूँजी और कच्चा माल खुद-ब-खुद मुनाफा पैदा नहीं कर सकता है। भूस्वामी तर्क देते हैं कि जमीन उन्हें अपने पूर्वजों से विरासत में मिली है लेकिन कोई भी जमीन का मालिक बन कर पैदा नहीं होता है। यदि हम मानव सभ्यता के इतिहास का विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि जमीन ताकत के बल पर मजबूत लोगों द्वारा कमजोर लोगों से हड़प ली गई थी। लेकिन वर्तमान शासकगण इस इतिहास को हम से छिपाने का प्रयास कर रहे हैं। वे छात्रों को सच्ची शिक्षा से दूर रखने का षड़यन्त्र कर रहे हैं। इसलिए वे फीस को इस हद तक बढ़ा रहे हैं कि बहुत कम छात्र ही शिक्षा हासिल कर सकें। इसके अलावा वे पाठ्यक्रम को इस तरीके से डिज़ाइन कर रहे हैं कि हमें सच्चा ज्ञान प्राप्त न हो सके। वे सच्चे ज्ञान से डरते हैं। इसलिए वे शिक्षा को इस तरीके से ढालने का प्रयास कर रहे हैं कि हम केवल तकनीकी ज्ञान ही प्राप्त कर सकें। वे छात्र-नौजवानों की नैतिक रीढ़ को तोड़ने के लिए गँवारपन, अश्लीलता, पोर्नोग्राफी को भी प्रसारित कर रहे हैं। वे माता-बहनों को मनोरंजन की वस्तु में तब्दील कर रहे हैं। इसकी वजह से महिलाओं के खिलाफ अपराधों में खतरनाक हद तक बढ़ोतरी हो रही है। यहाँ तक कि छोटी बच्चियों को भी नहीं बख्शा जा रहा हैं। यह फैसला हमें ही करना है आया हम इन सब के प्रति मूक दर्शक बने रहेंगे या इसके खिलाफ लड़ेंगे। क्योंकि जब तक हम चुप रहेंगे ये आपदाएँ निरन्तर बढ़ती ही रहेंगी। लेकिन यदि हम डट कर इसका मुकाबला करें और इसके खिलाफ ज्यादा से ज्यादा लोगों को संयुक्त आन्दोलन में खींचने का प्रयास करें तो हम इसको रोकने में कामयाब होंगे। कोई शासक इस आपदा का निराकरण नहीं करेगा। सभी शासकगण अपराधियों और असामाजिक तत्वों को शरण देते हैं।

उन्होंने यह भी कहा कि भ्रष्टाचार आज एक बहुत बड़ी आफत बना हुआ है। लेकिन मात्र भूख हड़तालों या छिटपुट आन्दोलनों से इसे निर्मूल नहीं किया जा सकता है। भ्रष्टाचार पूँजीवाद की पैदाइश है। जैसे पूँजीवाद ने साम्राज्यवाद को जन्म दिया है इसी प्रकार भ्रष्टाचार को भी पैदा किया है। इसीलिए भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए खुद पूँजीवाद को उखाड़ फेंकना जरूरी है। यदि हम इस मुख्य बिन्दु को समझ लें तभी केवल भ्रष्टाचार-विरोधी आन्दोलन सफल हो सकता है। सिर्फ कानून कोई मदद नहीं करेगा। आज हमारे समाज में बहुत सारे सख्त कानून हैं जैसे दहेज-विरोधी कानून, घरेलू हिंसा-विरोधी कानून इत्यादि। लेकिन क्या हम इन आफतों को निर्मूल कर सके हैं? समाज में जब तक नीति-नैतिकता का उच्च स्तर कायम नहीं हो जाता है तब तक भ्रष्टाचार को निर्मूल नहीं किया जा सकता। आज लोगों के नीति-नैतिकता के मान को नीचे गिराने के लिए तमाम तरह के षड़यन्त्र जारी हैं।

उन्होंने याद दिलाया कि देश के आजादी आन्दोलन के दौरान नौजवानों ने इस कदर नीति-नैतिकता और संस्कृति का उच्च स्तर हासिल किया था कि उन्हें 'देश के फूल' कहा जाता था। लेकिन आज आजाद भारत में छात्र-नौजवानों का स्तर तेजी से नीचे गिरता जा रहा है। क्यों यह द्विविभाजन है? क्योंकि उस समय सामाजिक उद्देश्य उनके दिल में समाया रहता था। लेकिन आज माँ-बाप अपने बच्चों को आत्मकेन्द्रित होना सिखा रहे हैं। आज भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद नौजवानों के रोल मॉडल नहीं हैं बल्कि फिल्म स्टार्स, क्रिकेट स्टार्स, फुटबाल स्टार्स, उद्योगपति आदि रोल मॉडल हैं। वे करोड़ों रुपया कमा सकते हैं। लेकिन मात्र पैसा कमाने से ही कोई महान आदमी नहीं बन जाता है। एक आदमी केवल तभी महान बन सकता है जब उसकी आँखों के सामने कोई सामाजिक लक्ष्य हो।

उन्होंने यह भी दिखाया कि आज तमाम राजनैतिक पार्टियाँ भ्रष्ट हो गई हैं और उनका नीति-नैतिकता का मान इतने निम्न स्तर तक गिर गया है कि लोग राजनीति से नफरत करने लगे हैं। उन्हें चिन्ता रहती है कि यदि उनके बेटे और बेटियाँ राजनीति में शिरकत करेंगे तो वे ऐसे ही पतित हो जाएंगे। इसीलिए वे अपने बच्चों को राजनीति में शामिल होने से रोकने का प्रयास करते हैं। इसीलिए वे अपने बच्चों को राजनीति में शामिल होने से रोकने का प्रयास करते है। लेकिन राजनीति खुद-ब-खुद पतन नहीं लाती है। भगतसिंह, आजाद, नेताजी और ऐसे अन्य क्रान्तिकारी राजनीति की वजह से ही एक बहुत ऊँचा स्तर हासिल कर सके थे। केवल सत्ता केन्द्रित, आत्म केन्द्रित राजनीति ही पतन लाती है जबकि क्रान्तिकारी राजनीति हमें ऊँचे स्तर तक उठाती है। इस प्रकार साफ जाहिर है कि केवल क्रान्तिकारी राजनीति ही हमारे छात्र-नौजवानों को पतन से बचाएगी। उच्च नीति-नैतिकता और मूल्यबोधों पर आधारित नए समाज के निर्माण के लिए क्रान्तिकारी राजनीति ही केवल उच्च संस्कृति ला सकती है।

लेकिन ऐसी क्रान्तिकारी राजनीति के लिए संघर्ष अवश्यम्भावी है। इसमें बड़ी कुर्बानियों की जरूरत होती है। मनुष्य की सचेत कार्यवाई ही है जो समाज में यह परिवर्तन लाएगी। कोई भी बाहर से हमारे लिए यह परिवर्तन नहीं ला देगा। हमें खुद इसके लिए कार्रवाई करनी होगी। इसके लिए काफी कुर्बानियों की जरूरत है। बिना कुर्बानी के कोई महान उद्देश्य हासिल नहीं किया जा सकता है। आजादी आन्दोलन में भी लाखों लोगों ने कुर्बानी दी थी और क्रान्ति के लिए भी कुर्बानी जरूरी है।

क्रान्ति के बारे में भी लोगों के अन्दर बहुत सी भ्रान्तियां हैं। क्रान्ति का मायना मात्र छिट-पुट हिंसा और ध्वंस नहीं है। क्रान्ति का मायना है समाज के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, भावगत तमाम पहलुओं में सम्पूर्ण परिवर्तन। तब लोग इसे समझते हैं जब लोग अपनी रोजमर्रा की समस्याओं को केन्द्र कर आन्दोलनों को गठित करने के संघर्ष को शुरू करते हैं, जिसके चलते उनके अपने संघर्ष के हथियार यानी जन कमेटियों का निर्माण होता है और उनकी नीति-नैतिकता का स्तर और ऊँचा उठता है तब वे क्रान्ति को सफल करेंगे। क्रान्ति के बिना लोगों की दुख-तकलीफों का अन्त नहीं होगा। जितनी जल्दी लोग इस सत्य को समझ लेंगे और क्रान्तिकारी राजनीति में शामिल होंगे उतनी ही जल्दी वे क्रान्ति को सफल कर सकेंगे। आज के दिन कॉमरेड शिवदास घोष की यही असल शिक्षाएं हैं।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly Date of Publication: 19 August, 2012

दिल्ली : इस युग के अन्यतम मार्क्सवादी चिन्तनकार, मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्टालिन व माओ-त्से तुंग के योग्य शिष्य और सर्वहारा के महान नेता, शिक्षक व पथ प्रदर्शक, एस.यू.सी.आई.(कम्युनिस्ट) के संस्थापक महामंत्री कॉमरेड शिवदास घोष का 36वाँ स्मृति दिवस 5 अगस्त को दिल्ली में यथोचित सम्मान के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न स्थानीय कार्यक्रमों के साथ-साथ एस.यू.सी.आई.(सी) की दिल्ली राज्य सांगठनिक कमेटी द्वारा हिन्दी भवन, आई.टी.ओ. में एक केन्द्रीय जनसभा का आयोजन किया गया जिसमें एस.यू.सी.आई.(सी) की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य और केरल राज्य सचिव कॉमरेड सी.के.लुकोस मुख्य वक्ता थे। सभा की अध्यक्षता दिल्ली राज्य सांगठनिक कमेटी के सदस्य कॉमरेड प्राण शर्मा ने की। सभा को दिल्ली राज्य सचिव कॉमरेड प्रताप सामल ने भी संबोधित किया।

मुख्य वक्ता कॉमरेड लुकोस ने पूंजीवाद-साम्राज्यवाद के संकट के बारे में बताते हुए कहा कि दुनिया भर के लोगों की समस्याओं का समाधान तब तक नहीं हो सकता जब तक कि इस मरणासन्न पूंजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंककर समाजवादी व्यवस्था को स्थापित नहीं किया जाता। केवल इसी से चौतरफा विकास के रास्ते खुल सकते हैं और प्रचुरता में वस्तुगत एवं विचारगत उत्पादन सम्भव है। लेकिन यह परिवर्तन अपने आप सम्भव नहीं है। कॉमरेड शिवदास घोष ने हमें सिखाया है कि उन्नत विचारधारा से लैस आम जनता ही अन्ततः इस महान सामाजिक परिवर्तन को ला सकती है। कॉमरेड लुकोस ने कहा कि कॉमरेड शिवदास घोष को सम्मान देने का एक ही उद्देश्य है कि उनकी शिक्षाओं को ग्रहण करते हुए, हर प्रकार की विषम परिस्थितियों के खिलाफ उनके महान और कष्टसाध्य संघर्ष को आत्मसात किया जाए। आज के समय में सबसे महत्वपूर्ण यह है कि कॉमरेड शिवदास घोष ने न केवल मार्क्सवाद-लेनिनवाद को भारत की सरजमीं पर ठोस रूप प्रदान किया बल्कि उसे वर्तमान युग की श्रेष्ठतम विचारधारा के रूप में समृद्ध और व्यापक भी किया। उन्होंने हर उस जटिल और पेचिदा समस्याओं को हल किया जो लेनिनोत्तर काल में मजदूर वर्ग के आन्दोलन के समक्ष पेश हुई थी और जिसको गहराई से समझे बगैर वर्तमान युग में मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सटीक व उन्नत समझदारी हासिल करना किसी के लिए भी नामुमकिन है। कॉमरेड शिवदास घोष ने मजदूर वर्ग की

दिल्ली में हुई स्मृति सभा का एक अंश

एक पार्टी सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया का गठन किया और पूंजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रांति की विचारधारा को भारत की भूमि पर ठोस रूप प्रदान किया। इस महान योगदान का महत्व समय बीतने के साथ-साथ और भी गहराई से महसूस किया जा रहा है। पूंजीवादी समाज समग्र रूप से जीवन के हर क्षेत्र में गहरे से गहरे संकट में डूब रहा है। संकट केवल आर्थिक ही नहीं बल्कि यह संकट सामाजिक और सांस्कृतिक ढाँचे को भी तहस-नहस कर रहा है। किसी भी तरीके से पैसा कमाना जिन्दगी का एकमात्र उद्देश्य बन गया है। एक व्यक्ति अरबपति बन सकता है लेकिन उसको मन की शांति प्राप्त नहीं होगी। क्योंकि पैसा वस्तुएँ खरीद सकता है, मन की शांति नहीं। क्योंकि वर्तमान व्यवस्था मरणासन्न हो चुकी है और अपनी उपयोगिता भी खो चुकी है, इसे एक नए समाज को रास्ता देना होगा जो कि पुराने समाज से हर प्रकार से अलग होगा। आज पूंजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रांति की आवश्यकता और भी अधिक सुस्पष्ट हो गई है। जिसकी जरूरत है वह है वांछित वैचारिक और सांगठनिक रूप से मजबूत श्रमिक वर्ग की एक ऐसी पार्टी की जो क्रांतिकारी संघर्ष को संचालित कर क्रांति को सफल कर सके। उन्होंने आगे बताया कि हाल ही में समाजवादी कैम्प के ध्वस्त हो जाने के बाद पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों ने यह प्रचार करना शुरू कर दिया था कि मार्क्सवाद फेल हो चुका है। लेकिन पूंजीवादी विश्व के गहराते संकट ने एक बार फिर से लोगों को क्षयग्रस्त पूंजीवाद-साम्राज्यवाद के हल खोजने के लिए मजबूर कर दिया है। उन्होंने कहा कि केवल जर्मनी में ही 'दास कैपिटल' की हजारों प्रतियाँ बिक चुकी हैं। अगर पूंजीवाद-साम्राज्यवाद ही वर्तमान समाज की हर समस्या की जड़ है तो मार्क्सवाद-लेनिनवाद और कॉमरेड शिवदास घोष की विचारधारा ही उसका एकमात्र हल है। आम जनता भी इस बात को समझ रही है और जिसका प्रमाण था हमारी पार्टी द्वारा 14 मार्च को आयोजित संसद अभियान जिसमें जनता की ज्वलंत मांगों को लेकर पूरे देश भर से इकट्ठे किए गए 3.5 करोड़ से भी ज्यादा लोगों के हस्ताक्षरों के साथ करीब एक लाख लोगों ने शिरकत की थी।

कॉमरेड लुकोस ने कहा कि आज हमारा संघर्ष न केवल पूंजीवाद के खिलाफ है बल्कि उन सोशल डेमोक्रेटिक ताकतों के खिलाफ भी है जो पूंजीवाद की रक्षा करती हैं। इन ताकतों का असली चेहरा काफी हद तक नन्दीग्राम-सिंगूर और केरल में हुए जनआंदोलनों के माध्यम से जनता के सामने आ चुका है जहाँ उनकी आपराधिक राजनैतिक गतिविधियाँ पूरी तरह से उजागर हो गई हैं। देश के लोग हमारी ओर उम्मीद भरी नजरों से देख रहे हैं और भारी संख्या में जुड़ रहे हैं। एकमात्र हमारी पार्टी के द्वारा ही हर जगह उच्च नीति-नैतिकता और उन्नत विचारधारा के आधार पर जनआंदोलन संगठित किए जा रहे हैं जो कि पूंजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रांति के परिपूरक हैं। हमारी पार्टी के द्वारा ही जनकमेटियाँ गठित की जा रही हैं जो जनता को एक वैकल्पिक राजनैतिक शक्ति प्रदान करेंगी। यह तब तक नहीं हो सकता जब तक हम स्वयं को पार्टी और क्रांति के साथ एकात्म करने के गहन और सामूहिक संघर्ष में नहीं उतार देते और इस तरह क्रांति के सबसे बड़े शत्रु व्यक्तिवाद को खत्म नहीं कर देते। अगर हम ऐसा नहीं कर पाते तो हम पूंजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रांति के महान कार्य के लिए व्यर्थ साबित होंगे और इतिहास के कूड़ेदान में डाल दिए जाएंगे।

नवंबर 2009 में दिल्ली में हुई हमारी पार्टी की द्वितीय कांग्रेस का जिक्र करते हुए कॉमरेड लुकोस ने कहा कि नवजीवन संचार और सुदृढ़ीकरण के गहन संघर्ष की प्रक्रिया जिसे पार्टी ने 2005 में शुरू किया था, यह कांग्रेस उसके प्रथम चरण का चरमोत्कर्ष थी। उन्होंने कॉमरेडों से यह संघर्ष जारी रखने और तीव्र करने तथा स्वयं को इस संघर्ष की एक उपज के रूप में विकसित करने की अपील की ताकि पार्टी क्रांति के कष्टसाध्य कार्य को सम्पूर्ण करने की अजेय शक्ति के रूप में उभर सके।

एआईएमएसएस द्वारा महिला सम्मेलन आयोजित

रेवाड़ी (हरि.): 22 जुलाई को रेवाड़ी में एआईएमएसएस का जिला सम्मेलन किया गया। सम्मेलन की शुरूआत सर्वहारा के महान नेता कॉ. शिवदास घोष के चित्र पर माल्यार्पण के साथ हुई। सम्मेलन कॉ. कृष्णा यादव की अध्यक्षता में हुआ। मुख्य वक्ता एआईएमएसएस की महासचिव कॉ. एचजी जयालक्ष्मी के अलावा दिल्ली एआईएमएसएस संयोजक ऋतु कौशिक, प्रीतिलता, सुमन व संतोष ने संबोधित किया। सम्मेलन में एआईडीवाईओ की महा सचिव कॉ. प्रतिभा नायक ने भी शिरकत की। सम्मेलन के अंत में एक 19 सदस्यीय जिला कमेटी का गठन किया गया। जिसमें प्रीतिलता को अध्यक्ष, संतोष को सचिव और कृष्णा व सुमन को उपाध्यक्ष चुना गया।

बुराड़ी (दिल्ली) : एआईएमएसएस की बुराड़ी इकाई द्वारा 22 जुलाई को महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता संगठन की बुराड़ी की इंचार्ज मीरा चौरसिया ने की। सम्मेलन की मुख्य अतिथि थी एडवोकेट दीपिका जैन, प्रमुख वक्ता थे एसयूसीआई (सी) के बुराड़ी लोकल कमेटी इंचार्ज कॉ. मैनेजर चौरसिया। उनके अलावा पार्टी के दिल्ली राज्य सचिवमण्डल सदस्य कॉमरेड प्राण शर्मा तथा एआईएमएसएस, दिल्ली संयोजक कॉ. रितु कौशिक ने भी सम्मेलन को संबोधित किया। सम्मेलन के अंत में आशा रानी के द्वारा एआईएमएसएस की बुराड़ी क्षेत्रिय कमेटी का प्रस्ताव रखा गया जो सर्वसम्मति से पारित हुआ तथा मीरा चौरसिया को अध्यक्ष एवं सुधा को सचिव चुना गया।

आशा कार्यकर्ताओं का प्रदर्शन

भिवानी : 17 अगस्त को आशा कार्यकर्ता यूनियन सम्बन्धित ऑल इण्डिया यूटीयूसी के बैनर तलेआशा कार्यकर्ताओं ने अपनी ज्वलन्त मांगों को लेकर यहाँ नेहरू पार्क में इकट्ठी हुई और लघु सचिवालय पर प्रदर्शन किया और मुख्यमंत्री व आला अधिकारियों के नाम अपनी माँगों का ज्ञापन उपायुक्त को सौंपा। गुड्डी देवी, कृष्णा, राजबाला यादव, शकुन्तला, आंगनवाड़ी नेत्री पुष्पा दलाल व ऑल इण्डिया यूटीयूसी के नेता राजकुमार ने प्रदर्शनकारियों को सम्बोधित किया। आशा कार्यकर्ताओं को मासिक बंधा वेतन 7000 रुपये देने, सरकारी कर्मचारी का दर्जा देने, सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाने, साल में दो वर्दियाँ देने, मोबाइल व बातचीत का खर्च, बस पास और हस्पतालों में रिटायरिंग रूम, पेयजल, शौचालय आदि का प्रबंध करने की माँग की गई।

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाषः 011-25726631, E-mail: sarvaharadrishtikon@yahoo.com